हरिभूमि
हिसार भूमि
रोहतक, रविवार 8 फरवरी 2026

तापमान

अधिकतम 25.6 डिग्री
न्यूनतम 7.5 डिग्री

12 चार महीने पहले भैणी बादशाहपुर में फर्जी...

12 भगवान कृष्ण की भक्ति में लीन हुए श्रद्धालु

खबर संक्षेप

मंत्री रणबीर गंगवा कल लेंगे अफसरों की बैठक

हिसार। लोक निर्माण एवं जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा 9 फरवरी को प्रातः 9:30 बजे पीडब्ल्यूडी (बीएंडआर) रेस्ट हाउस में एक बैठक की अध्यक्षता करेंगे। एक प्रवक्ता ने बताया कि बैठक में राम नगर कॉलोनी वार्ड नंबर-9 एवं सेक्टर-24 हिसार के बीच 18 फीट चौड़ी सड़क/मार्ग उपलब्ध कराने तथा राम नगर कॉलोनी के निवासियों से जुड़े विभिन्न मुद्दों सहित अन्य जनहित से जुड़े विषयों पर भी विचार किया जाएगा।

आदमपुर में गोरखधाम के ठहराव की मांग

आदमपुर। एक माह पहले रेलवे विभाग द्वारा गोरखधाम एक्सप्रेस का आदमपुर रेलवे स्टेशन पर ठहराव देने की घोषणा की थी, लेकिन अभी तक ठहराव शुरू नहीं होने से क्षेत्र के लोगों व व्यापारियों में निराशा है। इस संबंध में व्यापार मंडल प्रधान नवीन बेनीवाल, सचिव कमल बंसल, उप प्रधान संदीप गोयल तथा मानव कल्याण सेवा ट्रस्ट के प्रधान विनोद कुमार, जनसेवा समिति के प्रधान राजकुमार नामदेव ,भारत विकास परिषद के प्रधान अनिल गोयल ने रखीं समस्या।

सूर्य नमस्कार का किया अभ्यास

नारनौंद। हरियाणा योग आयोग के चेयरमैन डॉ. जयदीप आर्य और हिसार जिला के आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ.धर्मपाल पूनियां के निर्देशन में गांव मिलकपुर के सरकारी स्कूल में सूर्य नमस्कार का कार्यक्रम का आयोजन किया गया। योग सहायक पूनम देवी ने छात्रों व स्टाफ को दिनचर्या, योग एवं आयुर्वेद की जानकारी देते हुए बताया कि योग से मानसिक एकाग्रता, तनाव, चिंता एवं शरीर को स्वस्थ बना सकते हैं।इसलिए हमें हर रोज योग जरूर करना चाहिए। जब हम योग को प्राथमिकता देकर जीवन में शामिल करेंगे तो हमारा देश स्वस्थ हो जाएगा।

जिला मास्टर बैडमिंटन प्रतियोगिता 10 को

हिसार। जिला मास्टर बैडमिंटन प्रतियोगिता 35 प्लस से लेकर 80 प्लस तक की आयु वर्ग की कैटेगरी के लिए 10 फरवरी को करवाई जाएगी जिसमें पुरुष व महिला वर्ग में एकल, युगल व मिश्रित युगल के मुकाबले कराए जाएंगे। प्रतियोगिता के लिए खिलाड़ी हिसार जिले से होना चाहिए। हिसार जिला बैडमिंटन एसोसिएशन के प्रधान डॉ. कमल शर्मा ने आज बताया कि प्रतियोगिता का आयोजन विद्युत नगर के बैडमिंटन हॉल में 10 फरवरी को किया जाएग। खिलाड़ियों का रजिस्ट्रेशन विद्युत नगर बैडमिंटन हॉल में शुरू हो चुका है। उन्होंने जानकारी दी कि इस प्रतियोगिता व सिलेक्शन ट्रायल में विजेता खिलाड़ियों को राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए मेरिट के आधार पर चयनित किया जाएगा। राज्य स्तरीय प्रतियोगिता 20 से 22 फरवरी तक गुरुग्राम में आयोजित की जाएगी।

छात्रा पूजा का शोध उच्चस्तरीय अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका 'फूड केमिस्ट्री' में प्रकाशित

आलू में फ्यूजेरियम नामक कवक से होने वाले सड़न रोग पर हकृवि छात्रा पूजा ने किया शोध

- शोध के दौरान अनेक महत्वपूर्ण बातें सामने आईं
- भविष्य में छात्रा पूजा के इस शोध का काफी फायदा होगा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हिसार। छात्रा पूजा व अन्य सदस्यों के साथ कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज।

आलू में फ्यूजेरियम नामक कवक से होने वाले सड़न रोग पर हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के छात्रा पूजा ने शोध किया है। शोध के दौरान अनेक महत्वपूर्ण बातें सामने आई है। हरियाणा देश में प्रमुख आलू उत्पादक क्षेत्रों में आता है। भविष्य में छात्रा पूजा के इस शोध का काफी फायदा होगा। पूजा के इस शोध को उच्चस्तरीय अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका 'फूड केमिस्ट्री' में भी प्रकाशित किया गया है। पूजा की इस उपलब्धि पर हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज में बधाई दी है। पूजा ने यह शोध कार्य पादप रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रशांत चौहान के मार्गदर्शन में अपने स्नातकोत्तर शोध के दौरान किया।

हरियाणा के प्रमुख आलू उत्पादक क्षेत्रों से एकत्रित किए गए नमूने

पूजा व उनकी टीम द्वारा किया गया यह शोध आलू में फ्यूजेरियम नामक कवक से होने वाले सड़न रोग पर केंद्रित रहा जो हरियाणा की परिस्थितियों में पहली बार वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया गया है। शोध में पता चला कि यह रोग विशेषकर कोल्ड स्टोरेज के दौरान गंभीर स्थिति में लगभग 60 प्रतिशत तक नुकसान पहुंचा सकता है। शोध के दौरान आलू के नमूने हरियाणा के प्रमुख आलू उत्पादक क्षेत्रों से एकत्रित किए गए। साथ ही इस रोग के प्रभावी नियंत्रण के उपायों पर भी विस्तृत अध्ययन किया गया।

कुलपति ने दी बधाई

छात्रा पूजा की इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने अनुसंधान दल के सभी सदस्यों को बधाई दी तथा भविष्य में भी इसी प्रकार के उच्च स्तरीय शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने शोध से प्राप्त परिणामों को पेटेंट अथवा व्यावसायिक उत्पाद के रूप में विकसित करने पर भी बल दिया, जिससे हरियाणा के किसानों को प्रत्यक्ष लाभ मिल सके।आलू में फ्यूजेरियम नामक कवक से होने वाले सड़न रोग पर हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के छात्रा पूजा ने शोध किया है।

अत्यंत संतोषजनक पाए गए परिणाम

शोध टीम द्वारा विभिन्न लाभकारी सूक्ष्म जीवों एवं कृषि अवशिष्ट पदार्थों के अवयवों के प्रयोग किए गए, जिनके परिणाम रोग नियंत्रण में अत्यंत संतोषजनक पाए गए। अपने शोध कार्य के आधार पर पूजा ने दो अन्य शोध पत्र तथा एक समीक्षा शोध पत्र भी अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित किए हैं। पूजा का यह शोध पत्र विश्व की प्रतिष्ठित एवं उच्च प्रभावांक (इम्पैक्ट फैक्टर 15.8) वाली शोध पत्रिका 'फूड केमिस्ट्री' में प्रकाशित हुआ है। अपने शोध के साथ ही छात्रा पूजा ने अपनी उत्कृष्ट शोध उपलब्धि से विश्वविद्यालय का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया है।

ग्राम पंचायत ने बंदर पकड़ने में जताई असमर्थता

गांव राजथल के ग्रामीणों में बंदरों का खौफ, कई लोगों को काटा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौंद

गांव राजथल में पिछले काफी सालों से बंदरों का खौफ बना हुआ है। इससे ग्रामीण काफी परेशान हैं। हर रोज ये बंदर नुकसान पहुंचा रहे हैं। ग्राम पंचायत ने इन बंदरों को पकड़ने में असमर्थता जता दी है। ऐसे में ग्रामीण राम भरोसे ही बंदरों के खौफ के साये में रहने को मजबूर हैं।

गांव राजथल में सैकड़ों की संख्या में बंदर घरों की छतों और गलियों में सरेआम घूमते हुए दिखाई देंगे। आए दिन घरों से कपड़ों सहित अन्य सामान उठा कर ले जाते हैं। इसके कारण ग्रामीणों को काफी नुकसान पहुंच चुका हैं। काफी बार बंदर ग्रामीणों को काट भी चुके हैं। गांव की गलियों से छोटे बच्चे गुजरते हुए डरते है कि कही बंदर आकर उनको काट न ले। ग्रामीण काफी बार इसकी शिकायत भी कर चुके हैं लेकिन आज तक भी कोई हल नहीं निकला।

नारनौंद। गांव राजथल में घरों की छत पर बैठे हुए बंदर।

एक बंदर को पकड़ने के दो हजार रुपये मांगे

ग्रामीण विनीत मान ने प्रशासन और पंचायत विभाग को लिखित शिकायत भी दी थी। इसका कोई जबाब नहीं आया तो 2024 में सीएम विंडो लगाई। सीएम विंडो पर शिकायत लगाई तो ग्राम पंचायत की तरफ से जबाव मिला कि पंचायत ने अपने स्तर पर बंदर पकड़ने को कोशिश की थी लेकिन ग्रामीणों ने बंदर पकड़ने में सहयोग नहीं किया। जब बंदर पकड़ने वालों से संपर्क किया तो उन्होंने एक बंदर पकड़ने को दो हजार रुपये मांगे। पंचायत के पास कोई राशि नहीं है ऐसे में बंदर नहीं पकड़े जा सकते।

> सीएम विंडो पर शिकायत लगाई तो ग्राम पंचायत की तरफ से जवाब मिला कि पंचायत ने अपने स्तर पर बंदर पकड़ने को कोशिश की थी लेकिन ग्रामीणों ने बंदर पकड़ने में सहयोग नहीं किया। जब बंदर पकड़ने वालों से संपर्क किया तो उन्होंने एक बंदर पकड़ने को दो हजार रुपये मांगे।

ग्राम पंचायत के पास राशि उपलब्ध नहीं : सरपंच

गांव की सरपंच रेणु देवी ने बताया कि ग्राम पंचायत के पास राशि उपलब्ध नहीं है जैसे ही कोई ग्रांट उपलब्ध करवाई जाएगी तो बंदरों को पकड़ने की कार्रवाई की जाएगी। ग्रामीणों से अपील है कि वे बंदरों से बच कर रहे। उनसे दूरी रखे और ग्रामीण अपने स्तर पर भी बंदरों को पकड़ सकते हैं। इसके लिए ग्राम पंचायत का पूरा सहयोग रहेगा।

नाकामी: 12 दिन बीतने के बाद भी कमला के हत्यारों का सुराग नहीं

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौंद

करीब दो सप्ताह पूर्व गांव खांडा खेड़ी में दिनदहाड़े रिटायर्ड फौजी की बुजुर्ग पत्नी के जेवर लूटकर उसकी हत्या कर दी गई। पुलिस की चार टीमें इस गुत्थी को सुलझाने में लगी हुई हैं। लेकिन कामयाबी हाथ नहीं लग रही। हर एंगल से इस मामले की जांच की जा रही हैं लेकिन हत्यारा इतना शातिर था कि वह अब तक पुलिस की गिरफ्त से बाहर है। हालांकि पुलिस का दावा है वे जल्द ही इस मामले को सुलझाकर आरोपित को पकड़ लेगी। लेकिन अभी तक तो ऐसा नजर आ रहा कि पुलिस अंधेरे में तीर चला रही हैं।

गांव खांडा खेड़ी में 27 जनवरी को 60 वर्षीय कमला देवी अपने घर पर अकेली थी। उसका छोटा बेटा दिल्ली से घर आया तो देखा कि उसकी मां बैड से नीचे पड़ी हुई हैं। पास से देखा तो उसके पहने हुए गहने किसी ने निकालकर उसकी गला दबाकर हत्या कर दी थी। पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर हत्यारे को पकड़ने के लिए चार अलग अलग टीमें गठित कर जांच शुरू कर दी। वारदात को हुए दस दिन बीत चुके हैं लेकिन पुलिस अब तक इस वारदात के हत्यारे की पहचान करने में नाकाम रही हैं। हालांकि पुलिस ने आसपास लगे सभी सीसीटीवी कैमरों में खूब माथा पर्ची की है। पर कामयाबी नहीं मिली। मौके से डम्प भी उठाए गए हैं। वारदात की जगह से फिंगर प्रिंट भी लिए गए हैं।

हत्यारे गिरफ्त से बाहर

मृतका के छोटे बेटे मोहित ने बताया कि अभी तक हत्यारा पुलिस की गिरफ्त से बाहर है। इसके लिए पुलिस प्रशासन से बातचीत की है। उन्होंने भरोसा दिलाया है कि जल्द ही पकड़ लिया जाएगा। जब तक हत्यारा नहीं पकड़ा जाता सब के मन में भय बना हुआ है।

हर एंगल से जांच जारी

पुलिस की टीमें काम में लगी हुई हैं। हर एंगल पर जांच की जा रही हैं। कुछ समय जरूर लग रहा हैं लेकिन पुलिस मामले को सुलझाने के लिए हर वो कड़ी जोड़ रही हैं, जिससे की हत्यारे को पकड़ा जा सके। मामले को जल्द ही सुलझा दिया जाएगा।

-देवेंद्र सिंह नैन, डीएसपी।

जीएसएसएस गंगवा का वार्षिक समारोह आज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौंद

हिसार राज्य के लोकनिर्माण एवं जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा 8 फरवरी को जिले के दौरे पर रहेंगे। मंत्री के दौरा कार्यक्रम अनुसार 11 बजे गांव गंगवा स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में वार्षिक समारोह में मुख्य अतिथि होंगे। इसके उपरांत वे जनता की समस्याएं सुनेंगे और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देंगे।

नारनौंद। कॉलेज में छात्राओं को जागरूक करते हुए अधिवक्ता विनोद कुमार गर्ग। फोटो : हरिभूमि

छात्राओं को दी कानून की जानकारी

नारनौंद। राजकीय महाविद्यालय नारनौंद में प्रिंसिपल डॉक्टर पंकज गोयत के निर्देशन में महिला सशक्तिकरण स्कीम के अंतर्गत महिला प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. सुचेता द्वारा 'महिला विशिष्ट कानून पर वार्ता' का आयोजन किया गया। इस वार्ता के लिए अधिवक्ता विनोद गर्ग को आमंत्रित किया गया। जिन्होंने 'महिला सशक्तिकरण में कानून की भूमिका' और घरेलू हिंसा तथा साइबर अपराध जैसे विषयों पर छात्राओं के साथ अपने विचार साझा किए। इस व्याख्यान में बीए, बीकॉम, बीएससी और एमकॉम के छात्रों ने भाग लिया और महिलाओं से संबंधित कानूनों और अधिकारों के बारे में अपनी जानकारी में वृद्धि की। डॉ. नेहा, श्रीमती सुनीता, डॉ. मोनू, डॉ. मनजीत और डॉ. मनीता ने इस व्याख्यान के सफल आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

एसपी ने पीसीआर व ईआरवी पर तैनात पुलिस कर्मचारियों की लगाई क्लास

- पेट्रोलिंग ड्यूटी को लेकर दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हांसी

पुलिस अधीक्षक अमित यशवर्धन ने शनिवार को पुलिस लाईन हांसी में सभी राइडर, पीसीआर एवं ईआरवी पर तैनात पुलिस कर्मचारियों को पेट्रोलिंग ड्यूटी के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक ने बाइक राइडर पर तैनात सभी जवानों को अनिवार्य रूप से हेल्मेट का प्रयोग करने तथा वॉकी-टॉकी सैट का सही व प्रभावी ढंग से उपयोग के निर्देश दिए। वहीं पीसीआर व ईआरवी पर तैनात कर्मचारियों को किसी भी प्रकार की कॉल प्राप्त होते ही तुरंत मौके पर पहुंचकर स्थिति को नियंत्रण में लेने तथा सभी जवानों को अपने-अपने रूट मैप की पूर्ण जानकारी रखने के निर्देश देते हुए कहा कि इससे आपातकालीन स्थिति में बिना देरी के मौके पर पहुंचा जा सकेगा। ए बिना नंबर प्लेट के घूम रहे वाहनों को भी तुरंत इम्पाउंड कर उनकी पूरी तरह से जांच-पड़ताल की जाए।

हांसी। पीसीआर व ईआरवी पर तैनात पुलिसकर्मियों को संबोधित करते एसपी अमित यशवर्धन। फोटो : हरिभूमि

हिसार। तिरुपति धाम में निकाली गई सवारी शोभा यात्रा में हिस्सा लेते अर्चक व श्रद्धालुगण। *फोटो : हरिभूमि*

भगवान वेंकटेश की शोभा यात्रा में उमड़ी भक्तों की भीड़

हिसार। उत्तर व दक्षिण भारतीय संस्कृति में सामंजस्य स्थापित करने वाले श्री तिरुपति बालाजी धाम में अलग-अलग दिन माता गोदांबा, माता पद्मावती व भगवान वेंकटेश की सवारी शोभा यात्रा निकाली गई। इन सवारी शोभा यात्राओं में विभिन्न क्षेत्रों से काफी संख्या में श्रद्धालुओं ने हिस्सा लेकर अपनी आस्था जताई। इस दौरान पूरा तिरुपति धाम जय श्रीमन्ननारायण, जय तिरुपति बालाजी, जय भगवान वेंकटेश, जय माता गोदांबा व जय माता पद्मावती के उद्घोष से गुंजायमान हो गया। शोभा यात्रा के उपरांत सभी भक्तों में सात्विक गोष्ठी प्रसाद का वितरण किया गया। तिरुपति धाम में विधि-विधान के अनुसार माता गोदांबा का तिरुमंजन करके पूजा व आराधना की गई। इसी भांति विधिस्वरूप माता पद्मावती का तिरुमंजन करके पूजा-अर्चना की गई। इसी तरह भगवान वेंकटेश का अभिषेक करके जनकल्याण की कामना से आराधना की गई। अलग-अलग दिन माता गोदांबा, माता पद्मावती व भगवान वेंकटेश के विग्रह को फूलों से सुसज्जित करके रथ में स्थापित पालकी में विराजमान किया गया।

हिसार। भाविप की केशव शाखा द्वारा आयोजित निशुल्क शिविर में उपस्थित अतिथिगण व पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

निःशुल्क शिविर में 52 लोगों की नेत्र जांच

हिसार। भारत विकास परिषद की केशव शाखा हिसार द्वारा सेवक सभा अस्पताल के सहयोग से आंखों के सफेद मोतियाबिंद के ऑपरेशन का निशुल्क शिविर लगाया गया। यह शिविर केशव शाखा के सदस्य नीरज गुप्ता की ओर से उनके पूज्य पिताजी स्वर्गीय रमेश गुप्ता (खानकिया) की पुण्यस्मृति में आयोजित किया गया। इस शिविर में 52 रोगियों की निःशुल्क नेत्र जांच की गई एवं 11 रोगियों को निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चिन्हित किया गया। केशव शाखा द्वारा समाज के जरूरतमंद व्यक्तियों के लिए प्रति माह प्रथम शनिवार को आंखों की निःशुल्क जांच एवं सफेद मोतियाबिंद के ऑपरेशन निशुल्क करवाए जा रहे है निशुल्क शिविर की विधिवत शुरुआत मुख्यातिथि स्वर्गीय रमेश गुप्ता की पत्नी गीता देवी, नीरज गुप्ता, मोनिका गुप्ता, नंदन गुप्ता, भावना गुप्ता, सेवक सभा चैरिटेबल ट्रस्ट अस्पताल से सचिव धर्मेंद्र गोयल व ट्रस्टी मुकेश बंसल (केशव शाखा अध्यक्ष) के द्वारा संयुक्त रूप से मां भारती एवं स्वामी विवेकानंद जी के छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर की गई। इस अवसर पर माननीय नगर संघ चालक राहुल अग्रवाल, केशव शाखा सरपरस्त सुरेंद्र लाहौरिया, शाखा सचिव दीपक गौतम, नवीन अग्रवाल ट्रस्टी सेवक सभा अस्पताल व मयूख गुप्ता विशेष रूप से रहे।

नगर निगम ने 12 बेसहारा पशुओं को पकड़ा

हिसार। शहर से नगर निगम द्वारा बेसहारा पशुओं को पकड़ने का अभियान लगातार जारी है। अभियान के सहायक नोडल अधिकारी सुरेन्द्र वर्मा की देखरेख में नगर निगम की टीम ने शनिवार को विभिन्न क्षेत्रों में कार्रवाई की। एएसआई संदीप बिश्नोई ने बताया कि नगर निगम की टीम ने सेक्टर-15, सेक्टर 9-11, कैमरी रोड क्षेत्र से कुल 12 बेसहारा पशुओं को पकड़ा। पकड़े गए सभी पशुओं को गौ-अभ्यारण भेजे दिया गया। अभियान के दौरान किसी भी प्रकार की अव्यवस्था से बचने और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए नगर निगम की टीम के साथ पुलिस विभाग की टीम भी मौजूद रही।शहर से नगर निगम द्वारा बेसहारा पशुओं को पकड़ने का अभियान लगातार जारी है।

महापंचायत चौधरी छोटूराम धाम का मसला सुलझाने के लिए बुलाई बैठक में भिड़े खाप चौधरी

अब 7 मार्च को जसिया में होगी महापंचायत,बैठक को लेकर की गई विस्तार से चर्चा

दोनों पक्षों ने अलग-अलग बैठक करके जड़े एक-दूसरे पर आरोप

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

शहर की जाट धर्मशाला में सामाजिक लोगों की बैठक सात बार के प्रधान बलवान मलिक की अध्यक्षता में हुई। इसमें सैंकड़ों गणमान्य लोगों ने भाग लिया। बैठक का आयोजन सतीश चेयरमैन की ओर से किया गया। चौधरी छोटूराम धाम के विवाद को सुलझाने के लिए बुलाई गई। इस बैठक में दो पक्षों में विवाद हो गया, जिस पर एक पक्ष ने फिर से बैठक करके अपनी रणनीति बनाई। बैठक में सबसे पहले जसिया में निर्माणाधीन छोटूराम धाम में यशपाल मलिक द्वारा पैदा की गई समस्या के बारे में छोटूराम धाम की वैध कमेटी की कार्यकारिणी ने अपनी बात रखते हुए बताया कि जाट सेवा संघ ट्रस्ट के संविधान में यशपाल मलिक ने खुद को सैटलर बना रखा है ताकि संस्थान पर अपनी मनमानी कर सके व उसको लीज पर दे सके, लोन ले सके जैसी नीयत से उसने अपने बहुमत के ट्रस्टियों को अपने पक्ष में कर रखा है जबकि उनमें से कुछ ने तो ट्रस्ट की निर्धारित फीस भी जमा नहीं करवाई है।

हिसार। जाट धर्मशाला में आयोजित बैठक में उपस्थित लोग।

यशपाल मलिक पर ये जड़े आरोप

जाट महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक बल्हारा ने बताया कि जाट आंदोलन के दौरान यशपाल मलिक ने दिल्ली कूच से पहले 18 मार्च 2017 की रात को अकेले में सरकार से समझौता किया ताकि उसका कारोबार अच्छा चलता रहे और उस पर लगे देशद्रोह के केस (एफआईआर नंबर 394) 26 मई 2016 पुलिस स्टेशन जींद को खत्म करवाकर समाज के साथ बहुत बड़ा धोखा किया। समाज की आंखों में धूल झोंकने के लिए 19 मार्च 2017 को एक अटपटा समझौता किया गया जो आज तक लागू नहीं हुआ। बल्हारा ने ऐलान किया कि वे भविष्य में छोटूराम धाम में किसी भी पद पर किसी भी प्रकार का पद ग्रहण नहीं करेंगे। तन, मन व धन से छोटूराम धाम के लिए काम करुंगा। इस महापंचायत में अपना पक्ष रखने के लिए यशपाल मलिक को भी जसिया में छोटूराम धाम पर आना चाहिए। दोनों पक्षों की सुनकर पंचायत प्रतिनिधियों द्वारा उचित फैसला लिया जाएगा।

कंपाउंडिंग की ताकत समझें 5,500 की मासिक एसआईपी भी कर देगी लक्ष्य को पूरा

- कंपाउंडिंग में पैसा निवेश और रिटर्न दोनों पर बढ़ता है
- एसआईपी कंपाउंडिंग का सबसे सरल और प्रभावी तरीका है
- 5,500 की मासिक एसआईपी से 10–12 साल में बनेगा बड़ा फंड
- समय और निरंतरता ही कंपाउंडिंग की असली ताकत

बिजनेस डेस्क

निवेश की दुनिया में अगर किसी एक सिद्धांत को सबसे ज्यादा ताकतवर माना जाता है, तो वह है कंपाउंडिंग। यही वह जादू है, जो छोटी-छोटी बचत को समय के साथ एक बड़े फंड में बदल देता है। खासतौर पर सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए कंपाउंडिंग का प्रभाव और भी मजबूत हो जाता है। आज कई लोग यह सोचते हैं कि कम निवेश से बड़ा लक्ष्य कैसे पूरा होगा। लेकिन सच्चाई यह है कि अगर निवेश में समय, निरंतरता और धैर्य हो, तो 5,500 रुपये जैसी मामूली मासिक राशि भी भविष्य में बड़ा कॉर्पस बना सकती है। कंपाउंडिंग का अर्थ है कि आपका पैसा केवल आपकी लगाई गई राशि पर ही नहीं, बल्कि उस पर मिलने वाले रिटर्न पर भी रिटर्न कमाने लगता है। आसान शब्दों में कहें तो "ब्याज पर ब्याज" मिलता है। जैसे-जैसे समय बढ़ता है, कंपाउंडिंग का असर तेजी से बढ़ता चला जाता है। एसआईपी में यह प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से होती है क्योंकि आप हर महीने निवेश करते हैं और आपका पैसा लंबे समय तक बाजार में बना रहता है।

एसआईपी से लक्ष्य तक पहुंचने का उदाहरण

- मान लीजिए आप हर महीने 5,500 की एसआईपी शुरू करते हैं और आपको औसतन 12% सालाना रिटर्न मिलता है (यह केवल अनुमान है, वास्तविक रिटर्न बाजार पर निर्भर करता है)।
- मासिक निवेश: 5,500 रुपये
- सालाना निवेश : 66,000 रुपये
- कुल निवेश (11 साल में) : लगभग 7,26,000 रुपये
- अनुमानित रिटर्न : लगभग 7,24,000 रुपये
- कुल संभावित कॉर्पस : लगभग 14.5 लाख रुपये
- इस उदाहरण से साफ है कि 11 साल में आपका पैसा लगभग दोगुना हो सकता है, वह भी बिना किसी बड़ी एकमुश्त राशि के।

कंपाउंडिंग के लिए सबसे बेहतर

एसआईपी निवेश को आसान और अनुशासित बनाता है। आपको बाजार के उतार-चढ़ाव की चिंता नहीं करनी पड़ती और निवेश अपने आप नियमित रूप से होता रहता है। समय के साथ, बाजार की गिरावट और तेजी दोनों का फायदा आपको मिलता है, जिसे रुपी कॉस्ट एवरेजिंग कहा जाता है। एसआईपी खासतौर पर उन लोगों के लिए उपयोगी है जो बच्चों की शिक्षा, घर खरीदने, शादी या मेडिकल खर्च के लिए 6–15 साल के वित्तीय लक्ष्य के लिए धीरे-धीरे मजबूत फंड बनाना चाहते हैं।

कंपाउंडिंग की ताकत इन बातों पर निर्भर

कंपाउंडिंग का असर तीन चीजों से तय होता है इसमें समय, निरंतर निवेश, और धैर्य। जितनी जल्दी आप निवेश शुरू करेंगे और जितने लंबे समय तक निवेश बनाए रखेंगे, कंपाउंडिंग उतनी ही ताकतवर होगी। कंपाउंडिंग यह सिखाती है कि अमीर बनने के लिए बड़ी रकम नहीं, बल्कि समय पर सही शुरुआत जरूरी होती है। 5,500 रुपये की एसआईपी जैसी छोटी शुरुआत भी, अगर लंबे समय तक जारी रखी जाए, तो भविष्य में आपको आर्थिक रूप से मजबूत बना सकती है। एसआईपी और कंपाउंडिंग का मेल उन निवेशकों के लिए वरदान है, जो अनुशासन और धैर्य के साथ अपने सपनों को पूरा करना चाहते हैं।

कम पूंजी में बड़ा फंड बनाने को एसआईपी के जरिये करें निवेश

सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान से होगी नियमित बचत की आदत विकसित

हर माह तय राशि निवेश करें और बाजार की चिंता किए बिना लंबे समय का प्लान बनाएं

कम जोखिम के साथ बेहतर रिटर्न की संभावना रुपये की लागत औसत के कारण निवेश संतुलित

बिजनेस डेस्क

आज के समय में जब शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव आम बात हो गई है, ऐसे में आम निवेशक के लिए सुरक्षित और अनुशासित निवेश का रास्ता चुनना बेहद जरूरी हो गया है। सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान यानी एसआईपी इसी जरूरत को पूरा करता है। एसआईपी ने खासतौर पर नए और मध्यम वर्ग के निवेशकों के बीच लोकप्रियता हासिल की है, क्योंकि इसमें कम रकम से नियमित निवेश कर लंबी अवधि में मजबूत संपत्ति बनाई जा सकती है। एसआईपी के जरिए निवेशक हर महीने या तय समय अंतराल पर म्यूचुअल फंड में एक निश्चित राशि निवेश करता है। यह तरीका न केवल निवेश में अनुशासन लाता है, बल्कि बाजार की अस्थिरता से होने वाले जोखिम को भी काफी हद तक कम करता है। यही कारण है कि वित्तीय विशेषज्ञ एसआईपी को लंबी अवधि के निवेश के लिए सबसे प्रभावी माध्यम मानते हैं। इस रिपोर्ट के जरिये हम आपको बताएंगे कि एसआईपी में निवेश कर कैसे आप कम पूंजी में बड़ा फंड तैयार कर सकते हैं। सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) म्यूचुअल फंड में निवेश करने का एक ऐसा तरीका है, जिसमें निवेशक एक निश्चित राशि को नियमित अंतराल जैसे मासिक, तिमाही या साप्ताहिक निवेश करता है। इसमें निवेशक को एकमुश्त बड़ी रकम लगाने की जरूरत नहीं होती। एसआईपी अपने आप बैंक खाते से तय तारीख को कट जाती है और चुनी गई म्यूचुअल फंड स्कीम में निवेश हो जाती है। एसआईपी का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इसमें बाजार की टाइमिंग करने की जरूरत नहीं पड़ती। बाजार ऊपर हो या नीचे, निवेश नियमित रूप से चलता रहता है। जब बाजार गिरता है, तब उसी रकम से ज्यादा यूनिट मिलती हैं और जब बाजार ऊपर जाता है, तब कम यूनिट मिलती हैं। इस प्रक्रिया को रुपया लागत औसत कहा जाता है, जो लंबे समय में निवेश की औसत लागत को संतुलित करता है।

एसआईपी में निवेश क्यों करें

- नियमित और अनुशासित निवेशः एसआईपी निवेश में निरंतरता लाता है और बाजार की टाइमिंग की चिंता खत्म करता है।
- कम रकम से शुरुआतः 500 रुपये जैसी छोटी राशि से भी निवेश संभव, जिससे हर वर्ग के लोग निवेश कर सकते हैं।
- रुपया लागत औसत और चक्रवृद्धि का लाभः बाजार के उतार-चढ़ाव में भी संतुलित रिटर्न और लंबी अवधि में तेज ग्रोथ।
- विविधीकरण और कर लाभः म्यूचुअल फंड के जरिए जोखिम कम और ईएलएसएस के माध्यम से टैक्स में बचत।

कंपाउंडिंग का मिलता है लाभ

इसके अलावा एसआईपी में चक्रवृद्धि (कंपाउंडिंग) का लाभ भी मिलता है। निवेश से मिलने वाला रिटर्न दोबारा निवेश होता है, जिससे समय के साथ रिटर्न पर भी रिटर्न मिलने लगता है। जितनी जल्दी निवेश शुरू किया जाए और जितनी लंबी अवधि तक एसआईपी जारी रखी जाए, उतना ही अधिक फायदा मिलता है। एसआईपी की खास बात यह भी है कि इसे बहुत छोटी राशि से शुरू किया जा सकता है। आज कई म्यूचुअल फंड स्कीम्स में 500 या 1,000 रुपये प्रति माह से एसआईपी शुरू की जा सकती है, जिससे यह हर वर्ग के निवेशक के लिए सुलभ बन जाती है।

एसआईपी में निवेश के फायदे

एसआईपी केवल निवेश का तरीका नहीं, बल्कि एक वित्तीय आदत है जो व्यक्ति को भविष्य के लिए तैयार करती है। यह खासतौर पर उन लोगों के लिए फायदेमंद है जो जोखिम से बचते हुए धीरे-धीरे संपत्ति बनाना चाहते हैं। एसआईपी निवेशक को अनुशासन सिखाता है। तय तारीख पर निवेश होने से खर्चों पर नियंत्रण रहता है और बचत की आदत मजबूत होती है। इसके अलावा, एसआईपी भावनात्मक फैसलों से भी बचाता है। अक्सर निवेशक बाजार गिरने पर घबरा जाते हैं और निवेश बंद कर देते हैं, लेकिन एसआईपी में नियमित निवेश से यह डर कम हो जाता है। एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करने पर विविधीकरण का लाभ भी मिलता है।

एसआईपी के ये भी लाभ

कर बचत की दृष्टि से भी एसआईपी फायदेमंद है। इक्विटी लिंक्ड सेविंग स्कीम (ईएलएसएस) में एसआईपी के जरिए निवेश करने पर आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत कर में छूट मिलती है। इससे निवेश के साथ-साथ टैक्स प्लानिंग भी हो जाती है। लंबी अवधि में एसआईपी महंगाई को मात देने में मदद करता है। बैंक एफडी या पारंपरिक बचत योजनाओं की तुलना में इक्विटी आधारित एसआईपी अधिक रिटर्न देने की क्षमता रखती हैं, जिससे भविष्य की जरूरतों जैसे बच्चों की शिक्षा, घर खरीदना या रिटायरमेंट के लिए मजबूत फंड तैयार किया जा सकता है।

निवेश करना आसान

आज के डिजिटल युग में एसआईपी के जरिये निवेश करना बेहद आसान हो गया है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, मोबाइल ऐप और एसआईपी कैलकुलेटर की मदद से निवेशक अपने लक्ष्य के अनुसार निवेश राशि और अवधि तय कर सकता है। एसआईपी कैलकुलेटर संभावित रिटर्न का अनुमान लगाकर निवेश की सही योजना बनाने में मदद करता है। कुल मिलाकर, एसआईपी उन लोगों के लिए एक आदर्श विकल्प है जो कम जोखिम में, नियमित निवेश के जरिए लंबी अवधि में संपत्ति बनाना चाहते हैं। चाहे आप नौकरीपेशा हों, स्वरोजगार में हों या निवेश की शुरुआत कर रहे हों, एसआईपी हर किसी के लिए एक भरोसेमंद निवेश माध्यम है।

एक साल के लिए निवेश करना है तो ये हो सकते हैं बेहतर विकल्प

बिजनेस डेस्क। जब भी निवेश की बात आती है, ज्यादातर लोग रिटायरमेंट, बच्चों की शिक्षा या घर खरीदने जैसे लंबे समय के लक्ष्यों पर ध्यान देते हैं, लेकिन वित्तीय योजना में शॉर्ट-टर्म निवेश भी उतना ही जरूरी होता है। इमरजेंसी फंड बनाना, अतिरिक्त पैसे को सुरक्षित जगह रखना या किसी नजदीकी खर्च के लिए रकम जुटाना इन सभी के लिए 1 साल की निवेश योजना बेहद उपयोगी साबित होती है। केवल लंबी अवधि के निवेश पर निर्भर रहना कई बार जोखिम भरा हो सकता है। अचानक जरूरत पड़ने पर अगर आपको लॉन्ग-टर्म निवेश तोड़ना पड़े, तो नुकसान भी हो सकता है। ऐसे में 1 साल तक के शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट विकल्प न सिर्फ पूंजी की सुरक्षा करते हैं, बल्कि सेविंग अकाउंट से बेहतर रिटर्न भी दे सकते हैं। अधिकांश लोग निवेश को लंबे समय के लक्ष्यों जैसे रिटायरमेंट, बच्चों की शिक्षा या घर खरीदने से जोड़कर देखते हैं, लेकिन वित्तीय योजना में शॉर्ट-टर्म निवेश की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। इमरजेंसी फंड तैयार करना, अतिरिक्त पैसे को सुरक्षित जगह पर रखना या किसी नजदीकी खर्च के लिए राशि जुटाना इन सभी के लिए 1 साल की निवेश योजना बेहद उपयोगी साबित होती है।

1. बैंक फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी)
बैंक एफडी भारत में सबसे भरोसेमंद निवेश विकल्पों में से एक है। 7 दिन से लेकर 1 साल तक के लिए एफडी करवाएं।
फायदे : पूंजी की सुरक्षा, तय व सुनिश्चित रिटर्न, जोखिम ना के बराबर, सरकारी, निजी और स्मॉल फाइनेंस बैंक अलग-अलग ब्याज दरें देते हैं, इसलिए निवेश से पहले तुलना करना जरूरी है। पोस्ट ऑफिस टाइम डिपॉजिट सुरक्षित विकल्प।

2. सेविंग अकाउंट स्वीप-इन एफडी
यह सुविधा सेविंग अकाउंट और एफडी का मिश्रण है। इसमें तय सीमा से ज्यादा पैसा अपने आप एफडी में चला जाता है।
फायदे: जरूरत पड़ने पर तुरंत पैसा उपलब्ध, सेविंग अकाउंट से ज्यादा ब्याज ऑटोमैटिक और सुविधाजनक, यह विकल्प उन लोगों के लिए अच्छा है, जिन्हें लिक्विडिटी भी चाहिए और बेहतर रिटर्न भी।

3. रिकरिंग डिपॉजिट (आरडी)
अगर आप एकमुश्त रकम निवेश नहीं करना चाहते, तो आरडी अच्छा विकल्प है। इसमें हर महीने एक तय राशि जमा की जाती है।
फायदे: छोटी रकम से शुरुआत, नियमित बचत की आदत, सुरक्षित और स्थिर रिटर्न सैलरी पाने वाले निवेशकों के लिए यह विकल्प खासतौर पर उपयोगी है।

4. डेट म्यूचुअल फंड
डेट फंड सरकारी बॉन्ड, ट्रेजरी बिल और अच्छी क्वालिटी के कॉरपोरेट बॉन्ड में निवेश करते हैं।
1 साल के लिए उपयुक्त कैटेगरी: शॉर्ट ड्यूरेशन फंड, मनी मार्केट फंड, लो ड्यूरेशन फंड, इनमें एफडी से थोड़ा बेहतर रिटर्न मिलने की संभावना होती है, हालांकि थोड़ा जोखिम भी रहता है।

5. लिक्विड फंड
लिक्विड फंड बहुत कम अवधि के लिए बनाए गए होते हैं, लेकिन 1 साल तक निवेश के लिए भी इस्तेमाल किए जा सकते हैं।
फायदे: 1 कार्यदिवस में पैसा उपलब्ध, सेविंग अकाउंट से बेहतर रिटर्न, कम जोखिम, अतिरिक्त पैसों को पार्क करने के लिए यह बेहतरीन विकल्प है।

6. कॉरपोरेट फिक्स्ड डिपॉजिट
कई कंपनियां बैंक एफडी से ज्यादा ब्याज पर एफडी ऑफर करती हैं।

ध्यान रखें: कंपनी की क्रेडिट रेटिंग जरूर जांचें, केवल मजबूत वित्तीय स्थिति वाली कंपनियों में निवेश करें, ज्यादा रिटर्न के साथ जोखिम भी ज्यादा, जो निवेशक थोड़ा जोखिम उठा सकते हैं, उनके लिए यह विकल्प उपयुक्त है।

नौकरी के साथ-साथ स्मार्ट तरीकों से भी बढ़ा सकते हैं कमाई

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी नौकरीपेशा हैं और सिर्फ सैलरी पर ही जीवन काट रहे हैं तो आप अपनी गुजर बसर तो कर लेंगे, लेकिन अच्छा पैसा एकत्र नहीं कर पाएंगे। ऐसे में नौकरी के साथ कुछ छोटा मोटा स्टार्टअप शुरू करें और अपनी पूंजी को बढ़ाएं। पैसा कमाने के कुछ स्मार्ट तरीके भी हो सकते हैं, जिन्हें आजमाकर आप अपनी इनकम बढ़ा सकते हैं। एक अच्छी नौकरी जिंदगी को स्थिरता देती है, लेकिन बदलते समय में सिर्फ सैलरी पर निर्भर रहना कई बार जोखिम भरा हो सकता है। आज के दौर में एक अच्छी नौकरी मिलना किसी उपलब्धि से कम नहीं है। नौकरी आपको हर महीने तय इनकम देती है, जिससे घर चलता है, बच्चों की पढ़ाई होती है और रोजमर्रा की जिम्मेदारियां पूरी होती हैं, लेकिन बदलते समय के साथ सिर्फ नौकरी पर निर्भर रहना कई बार जोखिम भरा भी हो सकता है। कंपनी की स्थिति बदली, बाजार में मंदी आई या आपकी भूमिका खत्म हुई तो पूरी फाइनेंशियल प्लानिंग हिल सकती है। इसलिए अब नौकरी के साथ-साथ स्मार्ट तरीके से कमाई बढ़ाने की जरूरत है।

नौकरी को बनाएं अपनी सबसे मजबूत नींव

कमाई बढ़ाने का पहला और सबसे मजबूत रास्ता आपकी मौजूदा नौकरी से ही शुरू होता है। अपनी स्किल्स को अपडेट करना, नई जिम्मेदारियां लेना और खुद को कंपनी के लिए ज्यादा वैल्यूएबल बनाना लंबे समय में सैलरी और प्रमोशन दोनों दिला सकता है। हर किसी के पास कोई न कोई टैलेंट होता है। फर्क सिर्फ इतना है कि कुछ लोग उसे सिर्फ शौक तक सीमित रखते हैं, जबकि कुछ उसे कमाई का जरिया बना लेते हैं। अगर आपके पास समय और एनर्जी है, तो पढ़ाना, कंटेंट लिखना, डिजाइन, ऑनलाइन कंसल्टिंग या डिजिटल काम जैसे साइड प्रोजेक्ट शुरू किए जा सकते हैं। शुरुआत भले ही छोटी हो, लेकिन समय के साथ यही साइड इनकम आपकी बड़ी फाइनेंशियल ताकत बन सकती है। सबसे अच्छी बात यह है कि इससे आपकी नौकरी पर कोई सीधा दबाव नहीं पड़ता।

कमाई बढ़ाने का साइलेंट हथियार है निवेश

काम करके पैसा कमाना जरूरी है, लेकिन पैसे से पैसा बनाना भी उतना ही अहम है। निवेश वह तरीका है जो बिना शोर किए आपकी संपत्ति को धीरे-धीरे बढ़ाता है। नियमित एसआईपी, लॉन्ग-टर्म फंड्स या सुरक्षित विकल्प आपको भविष्य की बड़ी जरूरतों के लिए तैयार करते हैं। निवेश आपको आज अमीर नहीं बनाता, लेकिन कल के लिए मजबूत बनाता है. जो लोग जल्दी इसकी आदत डालते हैं, वे आगे चलकर ज्यादा तनाव-मुक्त रहते हैं।

इंश्योरेंस कमाई बचाने की ढाल

कमाई बढ़ाने के साथ-साथ उसे सुरक्षित रखना भी उतना ही जरूरी है। हेल्थ इंश्योरेंस अचानक आने वाले मेडिकल खर्चों से बचाता है और लाइफ इंश्योरेंस परिवार को आर्थिक सुरक्षा देता है। कई लोग इसे खर्च समझकर नजरअंदाज कर देते हैं, लेकिन असल में यह आपकी कमाई की सुरक्षा कवच होता है। सही समय पर लिया गया इंश्योरेंस सालों की मेहनत को एक झटके में खत्म होने से बचा सकता है।

नई स्किल्स से खुलेंगे नए रास्ते

आज का जॉब मार्केट तेजी से बदल रहा है। जो स्किल्स आज काम की हैं, जरूरी नहीं कि कल भी उतनी ही जरूरी रहें। इसलिए लगातार सीखते रहना अब विकल्प नहीं, मजबूरी बन चुका है। नई स्किल्स आपको सिर्फ नई नौकरी ही नहीं, बल्कि साइड इनकम और बेहतर फ्रीलांस मौके भी दिला सकती हैं। जब आपके पास विकल्प होते हैं, तो आप ज्यादा आत्मविश्वास और सुरक्षित महसूस करते हैं।

लाइफस्टाइल और कमाई में संतुलन जरूरी

कमाई बढ़ने के साथ खर्च बढ़ाना स्वाभाविक है, लेकिन अगर सारा पैसा सिर्फ बेहतर लाइफस्टाइल में ही चला जाए, तो भविष्य फिर भी असुरक्षित रहता है। समझदारी इसी में है कि इनकम बढ़ने पर बचत और निवेश भी उसी अनुपात में बढ़ें। इससे आप आज की जिंदगी का मजा भी ले पाएंगे और कल की चिंता भी कम रहेगी।

माता-पिता को सही प्लानिंग करनी होगी, तभी वे बच्चों के सपने पूरे कर पाएंगे

बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए समय रहते ठोस और संतुलित निवेश योजना बनाएं

बढ़ती महंगाई के दौर में बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए प्लानिंग जरूरी, आज हर परिवार की वित्तीय योजना को प्रभावित किया

योजना
बिजनेस डेस्क

कई माता-पिता एजुकेशन लोन को गलत मानते हैं और इससे पूरी तरह बचना चाहते हैं। लेकिन यह सोच हमेशा सही नहीं होती। सही योजना और समझदारी के साथ लिया गया एजुकेशन लोन कई मामलों में फायदेमंद साबित हो सकता है।

तेजी से बढ़ती महंगाई ने आज हर परिवार की वित्तीय योजना को प्रभावित किया है। खासतौर पर बच्चों की शिक्षा, जो कभी एक सामान्य खर्च मानी जाती थी, अब माता-पिता के लिए सबसे बड़ी वित्तीय जिम्मेदारी बन चुकी है। स्कूल से लेकर कॉलेज और फिर उच्च शिक्षा तक, फीस में हो रही बढ़ोतरी सामान्य महंगाई दर से कहीं ज्यादा है। इंटरनेशनल बोर्ड, विदेश में पढ़ाई, प्रोफेशनल और स्पेशल कोर्स, हॉस्टल और रहने का खर्च ये सभी मिलकर शिक्षा को और महंगा बना रहे हैं। ऐसे समय में अगर माता-पिता अभी से सही प्लानिंग नहीं करते, तो भविष्य में बच्चों के सपनों से समझौता करना पड़ सकता है। इसलिए जरूरी है कि बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए समय रहते एक ठोस और संतुलित निवेश योजना बनाई जाए। इस रिपोर्ट के जरिये हम आपको बताएंगे कि बच्चों की शिक्षा के लिए शुरू से ही कैसे रणनीति बनाएं।

एसआईपी की जल्दी शुरुआत करें

बच्चों की शिक्षा के लिए निवेश की सबसे बड़ी कुंजी है जल्दी शुरुआत। जितना जल्दी आप निवेश शुरू करेंगे, उतना ही ज्यादा आपको कंपाउंडिंग का फायदा मिलेगा। एसआईपी यानी सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान, शिक्षा फंड बनाने का एक बेहद कारगर तरीका है। एसआईपी के जरिए आप हर महीने एक तय राशि म्यूचुअल फंड में निवेश कर सकते हैं। इससे बाजार के उतार-चढ़ाव का असर कम होता है और लंबी अवधि में निवेश बेहतर रिटर्न दे सकता है। अगर बच्चे की उम्र कम है, तो आप इक्विटी आधारित फंड में ज्यादा निवेश कर सकते हैं, क्योंकि लंबा समय जोखिम को संतुलित कर देता है।

समय के साथ निवेश में बदलाव

कई माता-पिता बच्चों की शिक्षा के लिए सिर्फ एक ही तरह के निवेश पर निर्भर रहते हैं, जो आगे चलकर जोखिम भरा हो सकता है। सही रणनीति यह है कि समय के हिसाब से निवेश का संतुलन बदला जाए। जब बच्चा छोटा हो, तब इक्विटी फंड में निवेश ज्यादा रखा जा सकता है। लेकिन जैसे-जैसे कॉलेज या उच्च शिक्षा का समय नजदीक आता है, वैसे-वैसे जोखिम कम करना जरूरी हो जाता है। ऐसे समय में डेट फंड, फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी), सेविंग अकाउंट या शॉर्ट-टर्म इंस्ट्रूमेंट जैसे सुरक्षित विकल्पों में पैसा शिफ्ट करना समझदारी होती है। इससे बाजार गिरने की स्थिति में फीस के समय पैसों की कमी नहीं होगी।

केवल फीस नहीं, पूरे खर्च का रखें ध्यान

अक्सर माता-पिता शिक्षा की प्लानिंग करते समय सिर्फ ट्यूशन या कॉलेज फीस को ही ध्यान में रखते हैं, जबकि असल खर्च इससे कहीं ज्यादा होता है। बच्चों की उच्च शिक्षा से जुड़े कई अतिरिक्त खर्च होते हैं, जैसे : हॉस्टल या रहने का खर्च, किताबें और स्टडी मटीरियल, लैपटॉप, टैबलेट और अन्य गैजेट्स, हेल्थ इंश्योरेंस, यात्रा खर्च, एप्लिकेशन और एंट्रेंस एग्जाम फीस, इंटर्नशिप और प्रोजेक्ट से जुड़े खर्च आदि। अगर बच्चा विदेश में पढ़ाई करना चाहता है, तो वहां रहने, वीजा, बीमा और ट्रैवल का खर्च और भी ज्यादा हो सकता है। इसलिए शिक्षा फंड बनाते समय इन सभी खर्चों को शामिल करना बेहद जरूरी है।

एजुकेशन लोन को पूरी तरह न नकारें

कई माता-पिता एजुकेशन लोन को गलत मानते हैं और इससे पूरी तरह बचना चाहते हैं। लेकिन यह सोच हमेशा सही नहीं होती। सही योजना और समझदारी के साथ लिया गया एजुकेशन लोन कई मामलों में फायदेमंद साबित हो सकता है।

एजुकेशन लोन के लाभ

- रिटायरमेंट फंड को सुरक्षित रखता है
- एकमुश्त निवेश निकालने का दबाव कम करता है
- टैक्स में छूट का लाभ मिल सकता है
- पढ़ाई के बाद बच्चा खुद लोन चुकाने में सक्षम होता है
- हालांकि, लोन लेने से पहले उसकी ब्याज दर, चुकाने की अवधि और भविष्य की आय को जरूर ध्यान में रखें।

लक्ष्य आधारित निवेश योजना बनाएं

बच्चों की शिक्षा के लिए निवेश करते समय लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। किस उम्र में, किस देश में और किस कोर्स के लिए पढ़ाई करानी है। जब लक्ष्य साफ होता है, तो सही निवेश विकल्प चुनना आसान हो जाता है। इसके लिए आप एजुकेशन एसआईपी, चाइल्ड फंड, बैलेंस्ड म्यूचुअल फंड, डेट और इक्विटी का मिश्रण जैसे विकल्पों का उपयोग कर सकते हैं। समय-समय पर अपनी योजना की समीक्षा करना भी जरूरी है, ताकि बदलती जरूरतों के अनुसार निवेश में सुधार किया जा सके।

योजना बनाना अब विकल्प नहीं, बल्कि जरूरत

बढ़ती महंगाई के इस दौर में बच्चों की उच्च शिक्षा की योजना बनाना अब विकल्प नहीं, बल्कि जरूरत बन चुका है। केवल एसआईपी शुरू कर देना ही काफी नहीं है, बल्कि सही समय पर निवेश, जोखिम का संतुलन, अन्य खर्चों की गणना और जरूरत पड़ने पर एजुकेशन लोन का समझदारी से इस्तेमाल करना भी उतना ही जरूरी है। अगर माता-पिता आज से सही निवेश योजना बनाते हैं, तो आने वाले समय में बच्चों के सपनों को पूरा करने में कोई आर्थिक बाधा नहीं आएगी। सही प्लानिंग न सिर्फ बच्चों का भविष्य सुरक्षित करती है, बल्कि माता-पिता को भी मानसिक शांति देती है।

खबर संक्षेप

राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं स्वयंसेवक

हिसार। गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत आयोजित विशेष सात दिवसीय शिविर का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन समारोह में स्वयंसेवकों में समाज सेवा, राष्ट्र निर्माण और नेतृत्व विकास के प्रति विशेष उत्साह देखने को मिला। कार्यक्रम का शुभारंभ एनएसएस गीत के सामूहिक गायन से हुआ। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में फतेहाबाद के उपायुक्त विवेक भारती, विशिष्ट अतिथि के रूप में गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय के प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट निदेशक डॉ. प्रताप सिंह तथा महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विवेक कुमार सैनी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

डॉ. मुकेश एफएआई पुरस्कार से सम्मानित

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग के डॉ. मुकेश कुमार को 'संतुलित और एकीकृत उर्वरक उपयोग' को बढ़ावा देने के लिए प्रतिष्ठित इंटरनेशनल पोटाश इंस्टीट्यूट-फर्टिलाइजर एसोसिएशन ऑफ इंडिया पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान फर्टिलाइजर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के वार्षिक सेमिनार के दौरान दिया गया। सेमिनार में उर्वरक एवं रसायन मंत्रालय के सचिव डॉ. आरके मिश्रा, फर्टिलाइजर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के डायरेक्टर जनरल डॉ. एसके चौधरी उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने मृदा विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों द्वारा अर्जित की गई इस उपलब्धि पर उन्हें बधाई दी है।

पिछले साल जलभराव से खराब हुई थी फसलें

खराब फसलों के मुआवजे के लिए टोल पर गरजे किसान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

बुजुर्गों और विधवाओं की पेंशन बहाली तथा नहर में पानी छोड़ने की मांग
किसानों ने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा , मांग नहीं मानी तो होगा आंदोलन

रामायण टोल प्लाजा पर किसानों ने मुआवजे की मांग पर प्रदर्शन किया। इस दौरान किसानों ने हाल ही में हुई बारिश से फसलों को हुए नुकसान के मुआवजे, बुजुर्गों और विधवाओं की पेंशन बहाली तथा नहर में पानी छोड़ने की मांग की। किसानों ने सरकार से अपनी समस्याओं का जल्द समाधान करने की मांग की। किसानों ने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि उनकी मांगों पर ध्यान नहीं दिया गया, तो वे भविष्य में भी इसी तरह एकजुट होकर आंदोलन करने से गुरेज नहीं करेंगे। इससे पूर्व प्रदर्शन कर रहे किसानों ने बताया कि पिछले वर्ष जुलाई अगस्त माह में ज्यादा बारिश के कारण उनके खेतों में जलभराव हो गया है, जिससे फसलें खराब हो गई थी और उन्हें भारी आर्थिक नुकसान हुआ है। उन्होंने सरकार से तुरंत सर्वे कराकर उचित मुआवजा जारी करने की अपील की। प्रदर्शन के दौरान किसानों ने हरियाणा में बुजुर्गों और विधवाओं की पेंशन बंद या उसमें कटौती किए जाने पर भी नाराजगी जताई है। उन्होंने मांग की कि इन पेंशन योजनाओं को तुरंत बहाल किया जाए ताकि जरूरतमंदों को सहायता मिल सके।

हांसी। रामायण टोल प्लाजा पर प्रदर्शन करते किसान। फोटो : हरिभूमि

किसानों का ऐलान

किसानों ने सरकार से अपनी समस्याओं का जल्द समाधान करने की मांग की। किसानों ने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि उनकी मांगों पर ध्यान नहीं दिया गया, तो वे भविष्य में भी इसी तरह एकजुट होकर आंदोलन करने से गुरेज नहीं करेंगे।

ड्रेन में गंदा पानी छोड़े जाने पर जताई चिंता

इस अवसर पर किसानों ने बरवाला से घिराय और खोखा खरकड़ी ड्रेन में छोड़े जा रहे गंदे पानी पर भी चिंता जताई। उनका कहना था कि इस गंदे पानी से खेतों की जमीन खराब हो रही है जिससे कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है।

पेटवाड़ नहर में 2 सप्ताह पानी छोड़ने की मांग

किसानों ने पेटवाड़ नहर में दो सप्ताह तक लगातार पानी छोड़ने की मांग भी उठाई। किसानों के अनुसार, शहर में कॉलोनियों के विस्तार के कारण सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी नहीं मिल पाता है, और नहर के नियमित चलने से उन्हें काफी राहत मिलेगी।

गुरुकुल धीरणवास का 53वां वार्षिक उत्सव संपन्न

सरकार दिल्ली में महर्षि दयानन्द के नाम से संग्रहालय बनाए : आर्यवेश

आज समाज को सबसे अधिक आवश्यकता युवाओं के निर्माण की : आदित्यवेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। समारोह में उपस्थित स्वामी आर्यवेश, स्वामी आदित्यवेश, समाजसेवी बनवारी लाल व अन्य। फोटो : हरिभूमि

गुरुकुल धीरणवास की स्थापना के 53 वर्ष एवं आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में वार्षिक उत्सव का आयोजन गुरुकुल धीरणवास मे किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती वर्ष के अवसर पर केंद्र सरकार को दिल्ली में उनके नाम से एक अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय स्थापित करना चाहिए। इसमें स्वतंत्रता आंदोलन में आर्य समाज के योगदान को प्रदर्शित किया जाए क्योंकि आजादी के आंदोलन मे आर्य समाज का सर्वाधिक योगदान रहा है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उद्योगपति एवं समाजसेवी बनवारी लाल पुनिया ने आज बहुउद्देशीय सभागार गुरुकुल को समर्पित किया। उन्होंने कहा कि गुरुकुलों मे विद्वान एवं राष्ट्रवादी नवयुवक तैयार किए जाते है इसलिए गुरुकुलों को सहयोग जरुरी है। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश ने कहा कि आज समाज को सबसे अधिक आवश्यकता युवाओं के निर्माण की है। गुरुकुल शिक्षा परम्परा परम्परा युवाओं को संस्कारित करने का एक अभियान है। उन्होंने बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान शताब्दी पर कांगड़ी में अंतरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर कन्या गुरुकुल पंचगांव, डोभी, घिराय, गुरुकुल मताना डिग्गी, गुरुकुल आर्य नगर, गुरुकुल धीरणवास, ब्रह्म महाविद्यालय के बच्चों ने गीत प्रस्तुत किए।

यह रहे उपस्थित

इस अवसर पर आर्य समाज नागोरी गेट हिसार के प्रधान देवेंद्र सैनी, ब्लॉक समिति के अध्यक्ष अजय गावड़, सुभाषा पनिहार, कन्या गुरुकुल पंचगाव की आचार्य ज़्यादेवी, मार्केट कमेंटी चेयरमैन रविंद्र रोकी, कार्यकारी प्रधान सुबेसिंह आर्य, किसान नेता शमशेर आर्य, कैप्टन सूबे सिंह, महेन्द्र आर्य, दलबीर आर्य, संदीप धीरणवास, सुरेन्द्र आर्य, भूपसिंह आर्य, अजमेर सिंह आदि उपस्थित रहे।

करियर मार्गदर्शन एवं प्लेसमेंट जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

आदमपुर। राजकीय पॉलिटेक्निक के फूड टेक्नोलॉजी विभाग में विद्यार्थियों के करियर निर्माण के उद्देश्य से करियर मार्गदर्शन, अध्ययन एवं प्लेसमेंट जागरूकता तथा सॉफ्ट स्किल्स विकास कार्यक्रम का सफल आयोजन दिनांक किया गया। कार्यक्रम का आयोजन प्रधानाचार्य डॉ. बिजेंद्र सिंह के मार्गदर्शन में किया गया। इस अवसर पर रिचमाइंड पेरेंटिंग एंड करियर काउंसलिंग इंस्टीट्यूट की निदेशक एवं कोच शिल्पा मलिक ने बतौर विशेषज्ञ वक्ता विद्यार्थियों को करियर से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान कीं। उन्होंने उच्च शिक्षा के विभिन्न विकल्पों, देश-विदेश में अध्ययन की संभावनाओं, प्लेसमेंट की तैयारी तथा सॉफ्ट स्किल्स जैसे संचार कौशल, आत्मविश्वास, व्यक्तित्व विकास और साक्षात्कार कौशल के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस मौके पर वेद पाल यादव, सुनील धीमान, बंसी लाल, नीरू रानी, मोहित जिंदल एवं पूजा रानी भी उपस्थित रहे।

बाबा बंदा बहादुर स्कूल में किया 'परीक्षा पर चर्चा' कार्यक्रम का सीधा प्रसारण

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

हांसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम देखते विद्यार्थी।

बाबा बंदा बहादुर पब्लिक स्कूल में विद्यालय शिक्षा निदेशालय के निर्देशानुसार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों के साथ परीक्षा से जुडी प्रेरकवर्ता परीक्षा पर चर्चा 2026 का सीधा प्रसारण विद्यालय परिसर में टीवी पर दिखाया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विद्यार्थियों के साथ विशेष रूप से परीक्षा संबंधी तनाव, तैयारी और सकारात्मक सोच आदि पर बातचीत की। इसका लक्ष्य छात्रों को आत्म विश्वास, तनावमुक्त और सकारात्मक तरीके से परीक्षा का सामना करने के लिए प्रेरित करना है। विद्यालय की प्रधानाचार्या लवली चावला व प्रशासक प्रवीण चुघ ने बताया कि विद्यार्थियों में तनाव होना स्वाभाविक हैं। इस तनाव को सकारात्मक सोच, सोशल मीडिया के सीमित उपयोग व योग के द्वारा दूर किया जा सकता है। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में परीक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना और तनावमुक्त रहकर परीक्षा देने लिए प्रोत्साहित करना है।

हिसार। सेमिनार में अतिथियों का स्वागत करते कॉलेज पदाधिकारी।

कंप्यूटर साइंस विभाग ने कंप्यूटेशन की दी जानकारी

हिसार। दयानंद कॉलेज के कंप्यूटर साईंस विभाग की ओर से एक उच्च स्तरीय 'वैज्ञानिक बुद्धिमत्ता की समझ तथा क्वांटम कंप्यूटेशन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग' सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखने को मिली। इस अवसर पर सेमिनार के मुख्य अतिथि दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी के प्रतिष्ठित शिक्षाविद् एवं तकनीकी विशेषज्ञ डॉ. मुख्तियार सिंह रहे। कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि का स्वागत कंप्यूटर साईंस विभाग के इंचार्ज डॉ. नरेंद्र कुमार द्वारा किया गया। कंप्यूटर साईंस एसोसिएशन की इंचार्ज प्राध्यापक शालू रानी ने उनका अभिनंदन करते हुए कार्यक्रम में उनकी गरिमामयी उपस्थिति के लिए आभार व्यक्त किया। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. विक्रमजीत सिंह ने कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की।

डॉ. सचिन मित्तल एडवांस डेंटिस्ट्री टीम ने लगाया दंत जांच शिविर

- 220 बच्चों की मौखिक स्वास्थ्य जांच की गई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। दांत चैक करती दंत विशेषज्ञ। फोटो : हरिभूमि

स्माइल फॉर यूथ कार्यक्रम के तहत डॉ. सचिन मित्तल एडवांस डेंटिस्ट्री टीम ने सेक्टर 16-17 स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल जूनियर विंग में निशुल्क डेंटल चैकअप एवं जागरुकता कैंप लगाया। कैंप में डॉ. सचिन मित्तल एडवांस डेंटिस्ट्री की टीम से डॉ. नेहा बंसल ने बच्चों के दंत स्वास्थ्य की जांच की और उन्हें टूथब्रश करने का सही तरीका समझाया। करीब 220 बच्चों की मौखिक स्वास्थ्य जांच की गई। इस दौरान बच्चों को दंत समस्याओं से सम्बन्धित बीमारियों से अवगत कराया गया। कैंप का उद्देश्य दंत स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना और सभी के स्वस्थ दंत आदतों को विकसित करना है। स्कूल कोर्डिनेटर दीपिका भल्ला ने टीम का आभार जताया।

हिसार। खिलाड़ियों का स्वागत करते ग्रामीण। फोटो : हरिभूमि

टग ऑफ वार में हरियाणा बना नेशनल चैम्पियन

हिसार। महाराष्ट्र के पालघर में आयोजित 27वीं राष्ट्रीय सब-जूनियर रस्साकशी (टग ऑफ वार) प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए हरियाणा की टीम ने स्वर्ण पदक जीतकर प्रदेश का नाम रोशन किया। फाइनल मुकाबले में हरियाणा ने गुजरात की मजबूत टीम को हराकर नेशनल चैम्पियन बनने का गौरव हासिल किया। शनिवार को विजेता टीम के जिले के गांव हरिकोट में भव्य स्वागत एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। स्कूल के दो छात्र कृष और गगनदीप ने हरियाणा टीम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अपने शानदार प्रदर्शन से टीम को विजय दिलाने में अहम योगदान दिया। कोच अरुण खुंडिया के कुशल मार्गदर्शन में टीम ने पूरे टूर्नामेंट में बेहतरीन तालमेल और दमखम दिखाया। इस अवसर पर सतेंद्र, संदीप, संजय, वजीर, पवन कुमार, सुंदर मंडा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति व ग्रामीण उपस्थित रहे।

गोमाता सुरक्षित नहीं, राम राज्य कहां से आएगा

- रासलीला भक्ति से जोड़ने का सरल साधन : स्वामी कुंजबिहारी शर्मा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। पत्रकारों से बातचीत करते स्वामी कुंजबिहारी शर्मा (भैय्याजी)।

अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त, राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित व श्रीनिकुंज बिहारी रासलीला मण्डल, वृंदावन के संस्थापक रहे गोलोकवासी स्वामी श्रीराम शर्मा के पुत्र व मण्डल के निर्देशक स्वामी कुंजबिहारी शर्मा (भैय्याजी) ने कहा है कि रासलीला भक्ति से जोडने का सरल साधन है। हमारे जो पूर्वज रहे हैं, उनके संस्कारों को ग्रहण करें। अग्रसेन भवन में आयोजित पत्रकार वार्ता में रासलीला का प्राकट्य कैसे हुआ, इसके बारे में बताते हुए स्वामी कुंजबिहारी शर्मा ने कहा कि आज से लगभग 600 वर्ष पूर्व बरसाना के निकट एक कहरैला गांव है, वहां एक साधु रहते थे। नाम था घमंड देवाचार्य महाराज। एक दिन राधा-कृष्ण ने प्रकट होकर उनसे कहा कि बड़ा कलकाल आने वाला है। आप हमारी लीलाओं का प्रचार-प्रसार करो। उस समय घमंड देवाचार्य महाराज के पास कोई व्यवस्था नहीं थी, बृज के बालकों को ही ले आये। उस समय मंच नहीं था। अनके चमत्कार होने लगे। उसके बाद कई महापुरुष हुए जिनके प्रयासों से रासलीला होने लगी। मुख्य ध्येय श्रीकृष्ण की भक्ति का प्रचार करना था। श्रीकृष्ण का अवतार ही बृज में हुआ है। कथा सत्संग अवश्य श्रवण करना चाहिए।

भ्रष्टाचार पर घेरा

देश में फैले भ्रटाचार पर चिंता प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि इसके लिये लोकतंत्र की व्यवस्था जिम्मेवार है। रास का भविष्य उज्जवल है। भक्ति वाले लोग ही इसे समझ पाते हैं। आज के माहौल का जिक्र करते हुए स्वामी कुंजबिहारी शर्मा ने कहा कि गौमाता सुरक्षित नहीं है। शिक्षित वर्ग का ही शोषण हो रहा है, बाकियों का क्या होगा। ऐसे में राम राज्य कहां से आएगा। समाज व राष्ट्र उत्थान के लिये हर वर्ग अपना सकारात्मक योगदान दे, जैसे सेतु बनाने के समय गिलहरी ने दिया था।

हांसी : कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम में भाग लेते स्कूल शिक्षक।

एसडी मॉडर्न स्कूल में शिक्षकों को दिया प्रशिक्षण

हांसी। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के दिशा-निर्देशों के अनुसार एसडी माडर्न पब्लिक स्कूल में कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम (सीबीपी) के अंतर्गत खुशहाल कक्षा विषय पर एक दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञ प्रशिक्षकों कोमल गुप्ता व सलोनी खुराना ने विभिन्न गतिविधियों, चर्चाओं और उदाहरणों के माध्यम से शिक्षकों का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में लगभग 60 शिक्षकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन कम्प्यूटर विभाग अध्यक्षा डॉ रश्मि जैन की देखरेख में हुआ। प्रधानाचार्या ऋतु सिंह ने कहा कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों की कार्य क्षमता बढ़ाने के साथ-साथ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में भी सहायक सिद्ध होते हैं। विद्यालय प्रबन्धक समिति प्रधान सज्जन अग्रवाल, मैनेजर नकुल अग्रवाल, कैशियर चन्द्रभान गर्ग और सचिव रजत अग्रवाल ने कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों की कार्यशैली को सकारात्मक बनाते हैं और विद्यार्थियों के मानसिक, भावनात्मक एवं शैक्षणिक विकास में सहायक सिद्ध होते हैं।

लुवास में पशु चिकित्सा में एआई व मशीन लर्निंग पर राष्ट्रीय महत्व की संगोष्ठी में दी जानकारी

भविष्य की स्वास्थ्य सेवाओं की रीढ़ बनने जा रही कृत्रिम बुद्धिमत्ता : विनोद वर्मा

पशु चिकित्सा निदान में एआई के उपयोग पर अपने अनुभव साझा किए

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। संगोष्ठी को संबोधित करते कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा। फोटो : हरिभूमि

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के पशु चिकित्सा महाविद्यालय के पशु चिकित्सा विभाग की ओर से 'पशु चिकित्सा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मशीन लर्निंगः वर्तमान एवं भविष्य परिप्रेक्ष्य' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. (डॉ.) विनोद कुमार वर्मा के मार्गदर्शन में हुई इस संगोष्ठी की अध्यक्षता पशु चिकित्सा महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. मनोज रोज ने की। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. (डॉ.) विनोद कुमार वर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि बदलते समय में पशु चिकित्सा विज्ञान को नई तकनीकों से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग भविष्य की स्वास्थ्य सेवाओं की रीढ़ बनने जा रही हैं। उन्होंने कहा कि इन तकनीकों के माध्यम से रोगों की प्रारंभिक पहचान, सटीक एवं त्वरित निदान, उपचार की बेहतर योजना तथा पशुओं की निरंतर स्वास्थ्य निगरानी संभव हो पाएगी। इससे न केवल चिकित्सकों की कार्यक्षमता बढ़ेगी बल्कि पशुपालकों को भी बड़ा लाभ मिलेगा। संगोष्ठी में बीएमएल मुंजाल विश्वविद्यालय, गुरुग्राम से आए एआई एवं मशीन लर्निंग के विशेषज्ञों ने महत्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किए। विभाग के आंतरिक विशेषज्ञों ने हेमोप्रोटोजोअन रोगों सहित पशु चिकित्सा निदान में एआई के उपयोग पर अपने अनुभव साझा किए।

पशु चिकित्सा के बारे में बताया

विभागाध्यक्ष एवं आयोजन सचिव डॉ. दिव्या ने बताया कि संगोष्ठी का उद्देश्य पशु चिकित्सा एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बीच समन्वय स्थापित करना था। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के 16 संकाय सदस्यों तथा 42 स्नातकोत्तर विद्यार्थियों ने भाग लिया। समापन समारोह की मुख्य अतिथि मानव संसाधन एवं प्रबंधन निदेशिका डॉ. सोनिया सिंधु ने संगोष्ठी के विषयों की प्रासंगिकता की सराहना की। इस अवसर पर पशु चिकित्सा महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. मनोज रोज, विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशक डॉ. संदीप गुप्ता, अनुसंधान निदेशक डॉ. नरेश जिंदल, आईपीवीएस निदेशक डॉ. पवन, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. गौतम, लेखा नियंत्रक विकास खर्ब आदि मौजूद थे।

गुजवि के सात विद्यार्थियों को मिली नौकरी

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सेल के सौजन्य से आयोजित ई-कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव के माध्यम से विश्वविद्यालय के सात विद्यार्थियों को पिछले सप्ताह पिछले सप्ताह आरआरए प्रोजेक्ट मैनेजमेंट, लीप डिजीप्रिंट प्राइवेट लिमिटेड, राघवी फाइनेंस लिमिटेड, बाकार्डी और कोडिटास सॉल्यूशंस जैसी प्रतिष्ठित कंपनियों में प्लेसमेंट के अवसर प्राप्त हुए हैं। चयनित छात्रों को बधाई देते हुए कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने उनकी उपलब्धियों पर गर्व व्यक्त किया। प्लेसमेंट ड्राइव के बारे में जानकारी देते हुए, प्लेसमेंट निदेशक डॉ. प्रताप सिंह ने बताया कि इन बहुचरणीय चयन प्रक्रिया में प्री-प्लेसमेंट टॉक, साक्षात्कार एवं तकनीकी मूल्यांकन शामिल रहे तथा ड्राइव में एमबीए, एमकॉम व बीटेक के विभिन्न विषयों के विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

खबर संक्षेप

हिसार। जागरूकता व्याख्यान को संबोधित करती वक्ता।

विद्यार्थियों को बताए रेबीज से बचाव के उपाय

हिसार। राजकीय महाविद्यालय मंगाली में आवारा कुत्तों की रोकथाम एवं प्राथमिक उपचार विषय पर जागरूकता व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्या प्रो. अंजू चौधरी ने की। मुख्य वक्ता पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. मीतू ने विद्यार्थियों को आवारा कुत्तों से होने वाली समस्याओं, रेबीज से बचाव तथा कुत्ते के काटने की स्थिति में प्राथमिक उपचार की जानकारी दी। उन्होंने घाव को साबुन व पानी से धोने तथा समय पर वैक्सीनेशन करवाने पर विशेष बल दिया।

उकलाना। अंडरपास के लिए फिजिबिलिटी निरीक्षण करते अधिकारी व अन्य। फोटो : हरिभूमि

तीन विभागों ने चैक की फिजिबिलिटी

उकलाना। अंडरपास की मांग को लेकर 23 दिन से चल रहे धरने के बीच शनिवार को रेलवे, लोक निर्माण विभाग तथा सिंचाई विभाग की संयुक्त टीम ने मौके का फिजिबिलिटी निरीक्षण किया। हालांकि टीम के किसी अधिकारी ने आधिकारिक रूप से मीडिया को जानकारी नहीं दी, लेकिन निरीक्षण के दौरान भाजपा के वरिष्ठ नेता श्रीनिवास गोयल तथा पूर्व राज्य मंत्री अनूप धानक मौके पर मौजूद रहे। निरीक्षण के बाद दोनों नेताओं ने धरना कमेटी के सदस्यों से मुलाकात की और भरोसा दिलाया कि अंडरपास की मांग को सरकार गंभीरता से ले रही है।

हाईकोर्ट ने खारिज की किसान से रुपये ऐंठने वालों की जमानत याचिका

थाना व डीएसपी तक सुनवाई नहीं हुई तो एसपी तक पहुंचा पीड़ित, रिजल्ट अब भी जीरो

चार महीने पहले भैणी बादशाहपुर में फर्जी एनआईए रेड का खुलासा

- लगभग चार माह पुराने मामले में संदिग्ध नजर आ रही पुलिस की भूमिका
- आरोपी लोग हाईकोर्ट से अग्रिम जमानत का प्रयास करते लेकिन राहत नहीं मिली

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

जिले के गांव भैणी बादशाहपुर में फर्जी एनआईए अधिकारी बनकर छापा मारने वाले आरोपियों की जमानत याचिका पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट ने खारिज कर दी है। एनआईए के इस फर्जी छापे का मामला लगभग चार महीने पुराना बताया जा रहा है लेकिन केस दर्ज करने के बावजूद पुलिस ने इसे उजागर नहीं किया। इस दौरान आरोपी लोग हाईकोर्ट से अग्रिम जमानत का प्रयास करते रहे लेकिन उन्हें राहत नहीं मिली और याचिका खारिज हो गई।

पुलिस सूत्रों के अनुसार मामला पिछले वर्ष 6 अक्टूबर को भैणी बादशाहपुर गांव का है। इस हाई-प्रोफाइल मामले में उकलाना पुलिस की भूमिका शुरू से ही संदेह के घेरे में रही है। आरोप है कि पुलिस ने केवल एक आरोपी दीपक को गिरफ्तार किया है, जबकि रवि और जयवीर जैसे नामजद आरोपी लंबे समय तक पुलिस की पकड़ से बाहर रहे। आरोपी रवि कुमार खुद को होमगार्ड बताता था।

मामले में किसान से सरेआम दिनदहाड़े ठगी होने और गाड़ी का नंबर होने के बावजूद पुलिस महीनों तक मुख्य साजिशकर्ताओं को दबोचने में नाकाम रही, जिसके कारण आरोपियों को हाईकोर्ट जाने तक का समय मिल गया। पीड़ित किसान की पत्नी आज भी इस मामले से सदमे में है, क्योंकि उसने अपने गहने और परिवार के जेवर गिरवी रखकर ठगों को रकम दी थी।

हिसार। फुटेज में आई वह गाड़ी, जिसमें तीनों आरोपी आए। फोटो : हरिभूमि

गहने गिरवी रखकर किया रुपये का इंतजाम

पीड़ित सूबे सिंह ने बताया कि जब हमारे घर रेड पड़ी तो पत्नी घबरा गई। आरोपियों ने इसी का फायदा उठाया। आरोपियों ने दो लाख रुपये की डिमांड की मगर हमारे पास इतने रुपये घर में नहीं थे। मैंने पत्नी के जेवर और दूसरे अन्य गहने गांव में गिरवी रखकर रुपए का इंतजाम किया। इसी दौरान मेरे बेटे ने एक आरोपी को पहचान लिया और मुझे बताया कि यह बधावड़ गांव का दीपक है। दूसरा होमगार्ड बताने वाला रवि बरवाला थाने का है। इस पर शक हुआ।

6 अक्टूबर 2025 को हुई घटना : भैणी बादशाहपुर निवासी शिकायतकर्ता सूबे सिंह ने बताया कि वह खेतीबाड़ी करता है। मेरे दो लड़के मंदीप और रोहित हैं। 6 अक्टूबर 2025 को दोपहर करीब 1.30 बजे एक ब्रेजा गाड़ी, जिस पर भारत सरकार का बोर्ड लगा हुआ था, मेरे घर के सामने आकर रुकी। गाड़ी से तीन युवक उतरे, जिनमें से बधावड़ निवासी दीपक कुमार ने पासपोर्ट ऑफिस का फर्जी आई-कार्ड दिखाया और खुद को दिल्ली एनआईए का स्टाफ बताया।

80 हजार में हुई सेटलमेंट : सूबे सिंह के मुताबिक, दो लाख रुपये देने की गुंजाइश नहीं होने के कारण 80 हजार रुपये में सेटलमेंट हो गई। फिर हमने गांव में से ही 80 हजार रुपए इकट्ठे करके तीनों युवकों को दे दिए। रुपये लेने के बाद उन्होंने कहा कि तुमने किसी को यह बात नहीं बतानी। अगर किसी को ये बाते बताई, तो मुकदमा दर्ज करवाकर दिल्ली उठाकर ले जाएंगे। बाद में पता चला कि तीनों लड़कों ने झूठ बोलकर और डरा धमका कर धोखाधड़ी करके 80 हजार रुपये की ठगी की और वहां से चले गए।

आरोपियों की पहचान होने पर दी शिकायत : सूबे सिंह के अनुसासर हमने अपने तौर पर तीनों की जानकारी जुटाई। पता चला कि आरोपी बधावड़ निवासी दीपक, हसनगढ़ निवासी जयवीर व संदलाना निवासी रवि हैं। रवि अपने आपको होमगार्ड का बता रहा था। ठगी की इस वारदात के बाद घबराहट होने के कारण हम पुलिस में सूचना नहीं दे सके। आरोपियों की पहचान होने पर पुलिस को मामले की शिकायत दी। सूबे सिंह ने बताया कि इसके बाद वह बरवाला डीएसपी के सामने पेश हुआ, मगर उन्होंने भी मेरी सुनवाई नहीं की। इसके बाद मैं हिसार एसपी से मिला, तो उन्होंने शिकायत उकलाना थाने में मार्क कर दी, मगर आज तक आरोपी पकड़े नहीं गए हैं। मुझे डर है कि वह परिवार को नुकसान पहुंचा सकते हैं। घटना के बाद से ही मेरी पत्नी सदमे में है और उसका हिसार से इलाज चल रहा है।

थाने में जाकर की आरोपितों की शिनाख्त

सूबे सिंह के मुताबिक, पुलिस ने इस मामले की शिकायत होने पर तीनों को हिरासत में ले लिया और मुझे थाने में निशानदेही के लिए बुलाया। मैंने थाने जाकर तीनों की पहचान की। उनकी गाड़ी से एक लाख 15 हजार रुपये बरामद हुए थे। इसके बाद पुलिस ने मुझे यह कहते हुए घर भेजा दिया कि आप सुबह आ जाना, एफआईआर दर्ज कर लेंगे। सूबे सिंह का कहना है कि जब वह अगले दिन सुबह थाने गया, तो वहां से दो युवक गायब थे। पुलिस ने साठगांठ करके रात को होमगार्ड रवि और हसनगढ़ गांव के जयवीर को भी निकाल दिया। मैंने कहा आपने दो आरोपी छोड़ दिए, तो पुलिस ने कहा कि वो तेरा काम नहीं है। तेरे साढ़े 74 हजार ले जाओ। इस पर मैंने कहा कि साढ़े पांच हजार रुपये इसमें कम है, लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की।

दो लाख रुपये की डिमांड की

सूबे सिंह के अनुसार आरोपियों ने उससे कहा कि हमें शिकायत मिली है कि आपका लड़का रोहित ऑलाइन सट्टा खेलता है। फिर तीनों लड़कों ने मेरा और मेरे लड़के रोहित के मोबाइल ले लिए और चैक करने लगे। कहने लगे कि तुम ऑनलाइन सट्टा खेलते हो, तुम्हें दिल्ली लेकर जाएंगे। हमने ऐसा कार्य न करने की बात कहते हुए दिल्ली जाने से मना कर दिया। आरोप है कि तीनों हमारे साथ बदतमीजी की। केस दर्ज करने की धमकी दी। केस दर्ज नहीं करवाने की एवज में दो लाख रुपये की डिमांड की।

होंगे गिरफ्तार

एक आरोपी दीपक गिरफ्तार हो चुका है। पुलिस फरार दोनों आरोपियों की तलाश कर रही है। हम लगातार छापे मार रहे हैं और जल्द ही आरोपी पुलिस गिरफ्त में होंगे।

- एसआई कुलदीप, प्रभारी, उकलाना थाना।

नई सब्जी मंडी में स्टॉर्म वाटर लाइन को किया जाएगा दुरुस्त

हांसी। नई सब्जी मंडी में स्टार्म वाटर लाइन के निर्माण कार्य का शुभारंभ करते विधायक विनोद भयाना। फोटो : हरिभूमि

- 68 लाख रुपये की लागत से होने वाले मरम्मत कार्य का विधायक ने किया शुभारंभ, पांच माह में होगा काम पूरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

विधायक विनोद भयाना ने शुक्रवार को नई सब्जी मंडी परिसर में 68 लाख रुपये की लागत से होने वाले स्टॉर्म वॉटर लाइन की मरम्मत कार्य का विधिवत शुभारंभ किया। इस महत्वपूर्ण विकास कार्य का निर्माण हरियाणा राज्य कृषि विपणन बोर्ड द्वारा किया जाएगा, जिसे आगामी पांच माह के भीतर पूर्ण किया जाएगा। इस अवसर पर उपस्थित नागरिकों को संबोधित करते हुए विधायक विनोद भयाना ने कहा कि नई सब्जी मंडी हांसी क्षेत्र के किसानों, आढ़तियों एवं व्यापारियों के लिए एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र है। यहां प्रतिदिन बड़ी संख्या में किसान अपनी उपज लेकर आते हैं। स्टॉर्म वॉटर लाइन के सुदृढ़ होने से बरसात के मौसम में जलभराव की समस्या पूरी तरह समाप्त होगी और मंडी परिसर में व्यापारिक गतिविधियां और अधिक सुचारू रूप से संचालित हो सकेंगी।**11 लाख 45 हजार रुपये की अनुदान राशि के चेक बांटे :** प्रधानमंत्री सूर्य घर मुक्त बिजली योजना के अंतर्गत गांव शेखपुरा में एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें विधायक विनोद भयाना ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की और योजना से लाभान्वित हुए गांव के 24 बिजली उपभोक्ताओं को कुल 11 लाख 45 हजार रूपए की अनुदान राशि के चेक वितरित किए।

गांव थुराना गांव में विधायक भयाना का स्वागत

हांसी को जिला बनवाने के लिए किए गए सकारात्मक सफल प्रयासों के लिए थुराना गांव में शनिवार को विधायक विनोद भयाना के सम्मान में नागरिक अभिनंदन समारोह का आयोजन किया। गांव के निकट पहुंचने पर विधायक विनोद भयाना को ट्रैक्टरों के साथ कार्यक्रम स्थल तक लाया गया। ट्रैक्टरों के इस काफिले में सैकड़ों ट्रैक्टर शामिल हुए। इस मौके पर मार्केट कमेटी अध्यक्ष दिनेश धवन, उपाध्यक्ष सुरजीत गुज्जर, एसडीओ बिजेंद्र बामल, मार्केट कमेटी के सचिव अमित रोहिला, राकेश ठकराल, नवीन ठाकुर, ब्लॉक समिति अध्यक्ष प्रतिनिधि सुभाष यादव, सब्जी मंडी एसोसिएशन प्रधान अनील चावला, मोहित ठकराल, अनील सैनी, धर्मपाल सैनी आदि उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय गणित दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम कल

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में हरियाणा राज्य विज्ञान नवाचार एवं प्रौद्योगिकी परिषद के सहयोग से राष्ट्रीय गणित दिवस के उपलक्ष्य में एक समारोह आयोजित किया जाएगा। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में गणित एवं सांख्यिकी विभाग द्वारा आयोजित किए जाने वाले इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज मुख्य अतिथि होंगे जबकि संयुक्त राष्ट्र कार्यालय में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी सलाहकार डॉ रमेश कुमार जालान मुख्य वक्ता रहेंगे।

वीबी-जी राम जी में 100 की बजाय 125 दिन का रोजगार : अनूप

उकलाना। कार्यक्रम को संबोधित करते पूर्व मंत्री अनूप धानक।

उकलाना। विकसित भारत–गारंटी रोजगार एवं आजीविका मिशन (वीबी-जी राम जी) को लेकर भाजपा पिछड़ा प्रकोष्ठ के मंडल अध्यक्ष रामेश्वर दास भटिवाल के आवास पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 100 से अधिक मजदूरों व कार्यकर्ताओं ने भाग लेकर योजना की जानकारी प्राप्त की। मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री अनूप धानक ने कहा कि वीबी-जी राम जी योजना के तहत अब मजदूरों को 100 दिन की बजाय 125 दिन का रोजगार मिलेगा। उन्होंने बताया कि योजना में ऐसा प्रावधान किया गया है कि मजदूरों को फसल कटाई के समय अपने खेतों में काम करने का भी पूरा अवसर मिलेगा। यह योजना ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करेगी और हर वर्ग को इसका लाभ मिलेगा। भाजपा नेता एवं पूर्व चेयरमैन श्रीनिवास गोयल ने कहा कि वीबी-जी राम जी योजना ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार की गारंटी देगी। सरपंच प्रतिनिधि मंगल राम ने भी योजना के बारे में लोगों को जागरूक किया और अधिक से अधिक पंजीकरण कराने की अपील की। कार्यक्रम में रामफल नैन, सरपंच राजपति, राममिलन शर्मा, सत्यपाल शर्मा, रोहतास, पूर्व सरपंच सुरजीत ख्यालिया, शमशेर भूरिया, सतीश पूनिया, रोशनी देवी, राधिका, विनोद कुमार, सतबीर वर्मा, प्रकाश लांबा, चांदीराम, बलबीर सिंह, राजेश सिंहमार, शिशपाल, अनिल फ्रंड आदि रहे।

योगासन चैंपियनशिप विजेताओं ने स्वर्ण पदक जीत कर बढ़ाया मान

हिसार। योग विभाग के विजेता विद्यार्थियों को बधाई देते कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई।

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के योग विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों ने हाल ही में राजकीय महाविद्यालय पंचकूला में आयोजित राज्य स्तरीय इंटर कॉलेज योगासन चैंपियनशिप-2026 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक हासिल करके विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है। उच्चतर शिक्षा विभाग हरियाणा के तत्वावधान में आयोजित इस प्रतियोगिता में हरियाणा प्रदेश भर से लगभग सभी महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया जिसमें गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार (यूटीडी) की टीम ने महिला वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक जीता। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने विजेता प्रतिभागियों को बधाई दी। इस प्रतियोगिता में योग विभाग की छात्राओं की टीम रीटा, प्रीति और स्नेहलता, मनोविज्ञान विभाग की नैंसी व रसायन विज्ञान विभाग की मधु वर्मा ने भाग लिया तथा स्वर्ण पदक हासिल किया। इनमें से योग विभाग से रीटा ने व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा में भी स्वर्ण पदक हासिल किया है।

- कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने विद्यार्थियों को दी बधाई

शोधार्थी हिम्मत ने एचपीएससी परीक्षा उत्तीर्ण करके बढ़ाया गुजवि का सम्मान

हिसार। हिम्मत को परीक्षा उत्तीर्ण करने पर शुभकामनाएं देते कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई।

बीसी-बी श्रेणी में प्रदेश भर में प्रथम रहे शोधार्थी हिम्मत

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रतिभावान शोधार्थी हिम्मत ने अपनी उत्कृष्ट शैक्षणिक योग्यता का परिचय देते हुए हरियाणा लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सहायक प्राध्यापक (हिंदी), कॉलेज कैडर भर्ती परीक्षा उत्तीर्ण की है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने इस उपलब्धि पर उन्हें शुभकामनाएं एवं शुभाशीष प्रदान करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना की। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने इस अवसर पर कहा कि एक ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थी का प्रदेश स्तर पर शीर्ष स्थान प्राप्त करना विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता एवं शोध के उच्च मानकों का जीवंत प्रमाण है। हिम्मत ने इस प्रतिष्ठित परीक्षा की बीसी-बी श्रेणी में संपूर्ण प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त कर विश्वविद्यालय एवं अपने क्षेत्र को गौरवान्वित किया है। इस अवसर पर हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. राकेश बहमनी, शोध-निर्देशिका डॉ. गीतू धवन, डॉ. शर्मिला एवं डॉ. कल्पना विशेष रूप से उपस्थित रहे। विभागाध्यक्ष एवं उपस्थित प्राध्यापकों ने हिम्मत की इस विशिष्ट उपलब्धि की सराहना करते हुए इसे विभाग के लिए गर्व का क्षण बताया। मूल रूप से कैथल जिले के ग्राम दियोहरा निवासी हिम्मत वर्तमान में हिंदी विभाग में डॉ. गीतू धवन के निर्देशन में अपना शोध कार्य संपन्न कर रहे हैं।

धर्मकर्म

भक्तमाल कथा व रासलीला का सातवां दिन

भगवान कृष्ण की भक्ति में लीन हुए श्रद्धालु

- वृंदावन रहिये-श्यामा श्याम कहिये पर जमकर झूमे भक्त

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

गोविंद की गली परिवार, श्रीधाम वृंदावन धाम एवं लाला लखीराम आदमपुरिया परिवार के तत्वाधान में गौलोकवासी विनोद अग्रवाल की स्मृति में अग्रसेन भवन में चल रही भक्तमाल कथा के सातवें दिन संत गौरदास महाराज ने माधवेंद्र पुरी महाराज का चरित्र सुनाते हुए बताया कि महाप्रभु के आने से पूर्व भारत की भूमि को भक्तों हेतु सिंचित एवं उपजाऊ करने के लिए दक्षिण भारत में श्रीरंग क्षेत्र में प्रतिष्ठित ब्राह्मण गोविंद भट्ट जी के यहां प्रकट हुए थे। बचपन से ही आप खाने-पीने के लिए कुछ नहीं मांगते थे। इनकी माता जबरदस्ती इनको खिलाती थी। वह बस हर वक्त कृष्ण-कृष्ण कहते और मुझे वृंदावन जाना है यह रटते रहते।

हिसार। अग्रसेन भवन में आयोजित भक्तमाल कथा में प्रवचन देते संत गौरदास महाराज व उपस्थित श्रद्धालु।

संत गौरदास महाराज ने कहा कि भगवान कृष्ण के महान और परम भक्त माधवेंद्र पुरी एक बार वृंदावन की यात्रा पर गए और गोवर्धन नामक पवित्र पर्वत पर पहुंचे। दिव्य प्रेम के परमानंद में डूबे हुए वे दिन-रात से बेखबर थे, कभी खड़े रहते तो कभी आध्यात्मिक आनंद में लीन होकर जमीन पर गिर पड़ते थे। उनकी भक्ति अनुकरणीय है। उन्होंने भजन नेक आगे आ लाल तोपे रंग डालू नेक आगे आ..., देख सखी श्याम अंग सो रहा चंदन..., किशोरी कब होगी श्रीराधे कब होगी दया, वृंदावन रहिये-श्यामा श्याम कहिये...., वेणु बताते हुए किसी ने मेरा श्याम देखा... गाए तो श्रद्धालु आनंदित हो उठे। कथा उपरांत अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त श्रीनिकुंज बिहारी रासलीला मण्डल, वृंदावन के निर्देशक कुंजबिहारी शर्मा (भैय्याजी) की देखरेख में 30 कलाकारों द्वारा सीता स्वयंबर का दिव्य प्रस्तुतिकरण किया गया।

In Loving Memory of
Smt. Ram Bhateri
1938 - 05 February 2026

With deep sorrow and heavy hearts, the Gehlawat family informs the peaceful passing of Smt. Ram Bhateri, aged 88, on February 5, 2026.

Born in Village Kultana, Haryana, she embraced the values of strength, grace, and devotion from a young age. She married Sepoy Dhoop Singh of 6 MAHAR Regiment, a courageous martyr and war hero of the 1962 conflict. At the tender age of 25, she became a war widow, tasked with nurturing their 8-month-old son. As the brave wife of a soldier who sacrificed his life for the nation, she shouldered her responsibilities with remarkable courage and quiet resilience. Her life stood as a testament to sacrifice, dignity, and unwavering patriotism.

Smt. Ram Bhateri was celebrated for her brave spirit, gentle wisdom, and boundless love. She raised her family with strength and compassion, imparting values rooted in integrity and affection across generations. Her warmth touched everyone who had the honor of knowing her. Though she has departed from this world, her blessings, teachings, and memories will forever remain etched in our hearts.

She is survived and will be deeply remembered by:

- Son: Lt Col Niranjan Singh Gehlawat (Retd), Director Contracts
- Daughter-in-law:Smt. Santosh Kumari, Sanskrit Lecturer (Retd)
- Grandchildren:Mr. Prince Gehlawat & Maj. Shailli Gehlawat
- Granddaughter-in-law:Mrs. Preeti Rana , Manager, SBI
- Grandson-in-law:Maj. Abhishek Singh Thakur
- Great-grandchildren:Advaita ,Advik & Tejas

She will be lovingly remembered and profoundly missed by the entire Gehlawat, Sheoran, Rana, and Thakur families.
For condolences, please contact:
- +91 9530758981
- +91 9050889557

ॐ OM SHANTI ॐ

haribhoomi.com

हरिभूमि रविवार भारती

छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

स्पेशलः वैलेंटाइन-डे 14 फरवरी

रोहतक,रविवार 8 फरवरी 2026

{ आवरण कथा / सरस्वती रमेश }

कई सदी पहले कबीर ने कहा था, 'ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।' वास्तव में यह शब्द और इसमें निहित मनोभाव इतना गहन, इतना विराट है कि जिसकी थाह आज तक कोई नहीं लगा पाया। लेकिन जो भी इस सुंदरतम भाव को अपने मन में संजोता है, उसका जीवन आनंद से भर उठता है। इसकी पराकाष्ठा में वह स्वयं विलीन होकर भी सब कुछ प्राप्त करने की अनुभूति करने लगता है। यही वजह है कि व्यष्टि से जन्मा प्रेम समष्टि से एकाकार हो जाता है।

जीवन का गहनतम सुंदरतम मनोभाव प्रेम

यह सही है कि बीते कई वर्षों से वैलेंटाइन-डे का क्रेज इतना बढ़ गया है कि इस वजह से पूरे फरवरी को प्रेम का महीना माना जाने लगा है। इसकी आहट के साथ ही बाजार, प्रेम के प्रतीकों से सज जाते हैं। उपहार और गुलाबों की भरमार हर ओर दिखाई पड़ने लगती है। सवाल है, क्या वास्तव में प्रेम का उपहार और बाजार से कोई लेना-देना होता है? सदियों पहले कबीर दास जी कह गए हैं-

प्रेम न बाड़ी उपजे, प्रेम न हाट बिकाई।
राजा परजा जेहि रुचे, सीस देहि ले जाई।।

वे कह गए हैं कि प्रेम का बाजार से कोई लेना-देना नहीं होता है। सच्चा प्रेम न तो खेत में और न ही भौतिक वस्तुओं से उपजता है। प्रेम तो आत्म बलिदान मांगता है। प्रेम एक सघन-गहन भावना है। इसकी खरीदी-बिक्री नहीं हो सकती। इसकी तो बस अनुभूति की जा सकती है, हृदय के गहनतम अंतःस्थल में। बाजार सिर्फ छलावा और दिखावा को पोषित करता है, प्रेम को नहीं।

गहन-असीमित है प्रेम में निहित भाव

प्रेम की संकल्पना इतनी विस्तृत और गहन होती है कि इसे किसी भाषा में मुकम्मल रूप में व्यक्त कर पाना संभव ही नहीं है। ढाई अक्षर के प्रेम शब्द की व्याख्या करने बैठो तो समुद्र की सीमाएं कम पड़ जाएं, आकाश का विस्तार बौना जान पड़े। प्रेम का स्वरूप असीम है। प्रेम की संकल्पना जितनी सरल लगती है, उतनी गूढ़ भी है। गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर, प्रेम को एक अबूझ रहस्य कहते थे, क्योंकि इसे समझाने का कोई जरिया नहीं है। इसे तो वही समझ सकता है, जिसने स्वयं प्रेम किया हो। प्रेम में आत्म का बलिदान किया हो। जैसे राधा ने किया, मीरा ने किया। राधा-कृष्ण के प्रेम के गूढ़ रहस्य की व्याख्या सबने अपने-अपने तरीके से की है। युगों पहले दोनों वृंदावन की गलियों में शरीर रूप में उपस्थित रहे, पर वास्तव में दोनों का प्रेम आलौकिक, अशरीरी रहा। इसमें ना मिलन की चाह थी, ना सदैव साथ रहने की कोई इच्छा। सिर्फ स्वीकार्य भाव। कृष्ण का राधा के प्रति। राधा का कृष्ण के प्रति। राधा जानती थीं कि श्रीकृष्ण अपने कर्तव्य से बंधे हुए हैं। इसीलिए उनका प्रेम कृष्ण के पथ का कभी रुकावट नहीं बना। उनका प्रेम तो आत्मा के देवालय में प्रज्वलित दीपक समान शाश्वत है। हर वक्त, हर परिस्थिति में दिपदिपा रहा है। श्रीकृष्ण के साथ रहते हुए भी और कृष्ण से दूर रहकर भी। इसकी दीप्ति में कोई कमी नहीं आती। असल में प्रेम वही है, जिसमें कोई चाह ना हो। कोई शर्त ना हो। जहां चाहना और शर्तें आईं, वहीं प्रेम व्यापार हो गया। 'तुम मुझे प्रेम करो, क्योंकि मैं तुमको प्रेम करता हूं।' जहां यह भाव आता है, वहां प्रेम सौदा बन जाता है। उसका सौंदर्य मलिन हो जाता है। प्रेम तो प्रियतम की आत्मा का विस्तार है, जिसमें अंत में प्रियतमा को भी विलीन हो जाना है। जैसे गोपियां श्रीकृष्ण के प्रेम में विलीन हो गईं। जैसे हीर, रांझा के प्रेम में विलीन हो गई। *'रांझा-रांझा करदी वे, मैं आपे रांझा होई।'*

प्रेम में चालाकी नहीं चलती

प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति के कण-कण में प्रेम रचा बसा हुआ है। प्रेम को सबसे पवित्र भावना माना गया है। प्रेम के बल पर ईश्वर को भी जीता जा सकता है। लेकिन प्रेम में चालाकी का कोई स्थान नहीं। प्रेम, स्वार्थ, गणना और छल से परे एक पवित्र भाव है। जहां चालाकी आ जाती है,वहां विश्वास का क्षय होता है और प्रेम व्यापार बन जाता है। सच्चा प्रेम न तो लाभ देखता है, न ही हानि। वह निःस्वार्थ, निष्कपट और समर्पित होता है। चालाक व्यक्ति प्रेम को अपने हित के

लिए साधन मानता है, जबकि प्रेम स्वयं में साध्य है। इसलिए प्रेम तभी शुद्ध, दीर्घकालिक और स्थायी रह सकता है, जब उसमें ईमानदारी, पारदर्शिता और सच्चाई हो। घनानंद कह गए हैं-

अति सूधो सनेह को मारग है,
जहां नेकु सयानप बांक नहीं।

प्रेम से उपजते हैं जीवन मूल्य

प्रेम हमारे जीवन का सबसे उदात्त और शाश्वत मूल्य है। यह जीवन का मूल आधार है। मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने के लिए कुछ जीवन मूल्यों की आवश्यकता होती है। ये जीवन मूल्य प्रेम से ही उपजते हैं। प्रेम कठिन परिस्थितियों में भी जीवित रहने की शक्ति देता है। जीवन के महानतम उद्देश्य भी प्रेम के अभाव में अधूरे व निरर्थक सिद्ध होते हैं। प्रेम वह रोशनी है, जो जीवन को अर्थ व दिशा प्रदान करता है। देखा जाए तो सृष्टि के कण-कण में प्रेम समाहित है। सुबह की लालिमा, बारिश की रिमझिम बूंदें, वासंती हवाएं, फूलों में बसी सुगंध और नदियों के कल कल निर्मल प्रवाह के जरिए प्रकृति हर ओर प्रेम का संदेश प्रवाहित करती है। प्रेम वह शक्ति है, जिससे यह सृष्टि परिचालित होती है, जिसने अब तक मनुष्यता को बचा कर रखा है।

कम न हो प्रेम की महत्ता

जीवन में प्रेम का महत्व एक गहन सत्य है। प्रेम का कोई स्थानापन्न नहीं है। पूरा ब्रह्मांड प्रेम की असीम ऊर्जा व अदृश्य डोर से बंधा हुआ है। लेकिन बीते कुछ दशक से प्रेम के मूलाधार में कुछ अशक्तता आई है। विश्वास, करुणा, बलिदान, समर्पण जैसे भावों में संकुचन दिखलाई पड़ा है। नित्यप्रति एकाकी होती व स्व में सिमटती जा रही दुनिया के लिए प्रेम के विस्तार को जानना, समझना आज और भी आवश्यक हो गया है। *

विज्ञान की नजर में प्रेम

प्रेम, दुनिया की सबसे कोमल लेकिन सबसे शक्तिशाली भावना भी है। एक खूबसूरत पर जीवन का रूपांतरण करने वाला अहसास है प्रेम। इस अहसास को विज्ञान अपने नजरिए से व्याख्यायित करता है। विज्ञान कहता है कि हमारे हृदय में प्रेम की चिंगारी जलाने के लिए डोपामाइन हार्मोन जिम्मेदार है। जब हम किसी के प्रति अपनापन महसूस करते हैं, उससे गले मिलते हैं तो हमारे शरीर में ऑक्सीटोसिन नामक हार्मोन भी निकलता है। वहीं दिल की धड़कन बढ़ने पर एड्रेनेलिन नामक हार्मोन निकलता है। इन हार्मोंस के अधिक मात्रा में निकलने के कारण व्यक्ति को विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण या अपनेपन की भावना महसूस होती है। यही हार्मोंस दिमाग में प्यार का अनुभव कराते हैं। हालांकि मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि प्रेम को सिर्फ हार्मोन के जरिए समझना आसान नहीं है, क्योंकि प्रेम में जितनी इनकी भूमिका होती है, उतनी ही आपसी समझ, देखभाल, त्याग, भरोसा और भावनात्मक लगाव की भी भूमिका होती है। हार्मोन का काम तो कुछ देरी का होता है। लेकिन भावनाएं लंबे समय तक काम करती हैं और एक-दूसरे से जोड़कर रखती हैं। जिस तरह शरीर के लिए भोजन, पानी और गतिशीलता की जरूरत होती है, ठीक वैसे ही मस्तिष्क के लिए प्रेम की।

शोर कम-समझ ज्यादा बदल रहे प्यार के मायने

भले ही एक वर्ग के लिए वैलेंटाइन-डे प्रेम के इजहार और उल्लास का पर्व है। लेकिन युवाओं में ही एक वर्ग ऐसा भी है, जो प्यार के इस उत्सव को भी सहजता से मनाता है। उनके लिए प्रेम, दिखावा नहीं साझेदारी और समझदारी का रिश्ता बन चुका है।

{ नया दौर / डॉ. अनिता राठौर }

सुबह के 7 बजे हैं। एक छोटे से फ्लैट में दो लोग रोज की तरह अपने अपने लैपटॉप खोलकर दिन की शुरुआत करने लगते हैं। जबकि उस दिन 14 फरवरी है यानी, प्रेम का दिन, वैलेंटाइन-डे। लेकिन आस-पास न कहीं गुलाब है, न कोई मोमबत्ती है और न आपस में कोई फिल्मी डायलॉग बोले जाते हैं। हां, टेबल पर रखी दो कप चाय और एक-दूसरे की तरफ बढ़ा हुआ हल्का-सा मुस्कुराता चेहरा। आप भले न यकीन करें, लेकिन सच है कि परिपक्व सोच रखने वाले बहुत से युवा युगलों का प्यार, शांत-सजग-व्यावहारिक और भरोसे से भरा हुआ हो चुका है। आज का प्यार, दो दशक पहले जैसा नहीं रहा। यानी, एक वर्ग के लिए प्रेम ने अपना रूप बदला है। लेकिन गहराई नहीं खोई। प्रेम अब दिखावे से निकलकर समझदारी, व्यावहारिकता और लाइफस्टाइल के संग आ गया है। इसमें मानसिक सुरक्षा भी पहले से कहीं ज्यादा शामिल हो चुकी है।

अब भावना नहीं साझेदारी

आज की समझदार पीढ़ी के पास प्यार को सिर्फ फीलिंग के रूप में देखने की न तो जरूरत है और न ही इतनी फुर्सत। उनके लिए प्यार, साझेदारी का नाम है। जीवन की जिम्मेदारियों का नाम है। मिलकर उठाई जाने वाली जिम्मेदारियां। इसलिए आज के कपल मिलकर करियर की योजना बनाते हैं। खर्च और बचत पर खुलकर बात करते हैं। घरेलू और बाहरी जिम्मेदारियों को ईमानदारी से बांटना स्वीकार करते हैं और मुश्किल समय में एक-दूसरे का सहारा बनते हैं। आज के समय में, 'तुम मुझसे कितना प्यार करते हो?' से ज्यादा यह अहम हो गया है, 'हम एक-दूसरे के लिए कितने भरोसेमंद हैं?'

स्पष्टता है सबसे बड़ी खूबी

आज कपल्स के प्यार में जितनी स्पष्टता है, इतनी पहले कभी नहीं रही और यही आज के प्यार की सबसे बड़ी खूबी है। कपल अब यह कहने से नहीं डरते कि वो चाहते क्या हैं और साफ-साफ बताते हैं कि वो क्या नहीं चाहते? मसलन- उन्हें शादी करनी है या नहीं। बच्चे चाहिए या नहीं। एक-दूसरे के लिए कितना स्पेस चाहिए और सबसे बड़ी बात यह है कि वो किस तरह का जीवन जीना चाहते हैं? याद रखिए, यह स्पष्टता रिश्तों को तोड़ती नहीं है बल्कि ज्यादा मजबूत बनाती है, क्योंकि भ्रम पर टिके रिश्ते बहुत जल्दी थक जाते हैं और सच्चाई के सहारे आगे बढ़ने वाले रिश्ते दूर तक जाते हैं।

अब प्यार का हिस्सा है मेंटल हेल्थ

आज के युवा इस बात को भली-भांति जानते हैं कि उनका मानसिक स्वास्थ्य भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि शारीरिक। इसलिए अब पार्टनर्स एक-दूसरे की थकान को समझते हैं। एंग्जाइटी और तनाव पर बिना झिझक खुलकर बात करते हैं और जरूरत पड़ी तो प्रोफेशनल्स की मदद लेने से न झिझकते, न कतराते हैं।

आज के युवा एक-दूसरे से बड़ी सहजता से कहते हैं, आज मेरा मन ठीक नहीं है। क्योंकि वो जानते हैं कि उनके इस वाक्य को गलत शब्द और संदर्भ में नहीं लिया जाएगा। पुरानी पीढ़ी के लोग भले टेक्नोलॉजी को कितना कोसते हों, लेकिन युवाओं के लिए टेक्नोलॉजी अलगाव का नहीं जुड़ाव का माध्यम है। भले पुरानी पीढ़ी के लोग मानते हों कि मोबाइल और इंटरनेट रिश्तों का दुश्मन है। लेकिन आज के दौर में प्यार करने वाले युवा इस बात से कतई सहमत नहीं हैं। इसलिए वो वीडियो कॉल के साथ भी खाना खाते हैं। एक-दूसरे को वॉयस नोट्स भेजते हैं, उनकी प्लेलिस्ट साझा होती है और हां, ऑनलाइन कैलेंडर में डेट-नाइट भी फिक्स करते हैं। उनके लिए टेक्नोलॉजी केवल टाइम पास का जरिया नहीं दिलों की दूरी कम करने के नए रास्ते भी खोलती है।

बराबरी है रिश्तों की बुनियाद

आज के प्रोफेशनल युवा यह मानते हैं कि रिश्ता मालिकाना हक नहीं बराबरी का संबंध है, इसलिए बिना झिझक और बिना किसी हैंगओवर के घरेलू काम दोनों मिलकर करते हैं। सारे फैसले मिलकर लेते हैं। एक-दूसरे के करियर को बराबर का सम्मान देते हैं। आज के युवाओं के बीच 70 के दशक की फिल्मों के यह डायलॉग शायद ही कहीं सुनने को मिलते हों, 'मैं तुम्हारे बिना कुछ नहीं हूं।' बल्कि इसकी जगह आज यह डायलॉग आम है, 'मैं तुम्हारे साथ और बेहतर बनता-बनती हूं।' आज के प्यार की मजबूती सेल्फ लव है, क्योंकि अब नई पीढ़ी को यह बात बहुत अच्छी तरह से समझ में आती है कि खुद से प्यार करना स्वार्थ नहीं, प्यार की समझ होना है। इसलिए आज के युवा अपने शौक के लिए समय निकालते हैं, अपने रिश्तों की सीमाएं तय करते हैं और हर वक्त उपलब्ध रहने की मजबूरी से दूर रहते हैं। क्योंकि जब कोई खुद संतुलित होता है, तभी किसी रिश्ते में स्वस्थ योगदान दे पाता है।

लब्बोलुआब यह कि आज वैलेंटाइन-डे केवल गिफ्ट्स एक्सचेंज का दिन नहीं रहा। यह समझदारी भरी बातचीत का दिन है, यह एक-दूसरे को ध्यान से सुनने का दिन है, यह भविष्य की योजनाएं साझा करने का दिन है और यह आभार जताने का भी दिन है। आज के युवा इस दिन साथ बैठकर एक-दूसरे के लिए प्यार और मनुहार के गीत नहीं गाते, अपने साझा लक्ष्य तय करते हैं। फाइनेंशियल प्लानिंग बनाते हैं, क्योंकि प्यार की नई भाषा और नई परिभाषा यही है। *

{ कविता / आरती आस्था }

प्रेमानुभूति

मुझे नहीं आता
करना प्रेम
बांधकर इसे सीमाओं में
सच कहूं तो
करने-कराने जैसी शय भी
लगी नहीं मुझे कभी प्रेम
प्रेम तो नाम है बिखरने का
खुद को बिखराने का
कितना भी बिखरो इसमें
बिखराओ भी चाहे जितना
करते रहते हैं हम
प्रेमानुभूति से
समृद्ध-संपन्न-संपूर्ण
खुद को ही।

{ व्यंग्य / अंशुमाली रस्तोगी }

इश्क की शमा जलाए रखिए

इधर कुछ दिनों से नेगेटिव होना-सोचना कतई छोड़ दिया है मैंने। ज्यादातर पॉजिटिव ही रहता हूं। देश-दुनिया की फिक्र उतनी ही करता हूं, जितना मेरा दिमाग इजाजत दे। मूड को कूल रखता हूं। दिल बहलाने के लिए, कभी-कभार, पूर्व प्रेमिका के खतों को पढ़ लिया करता हूं। उसके भेजे वैलेंटाइन-डे के काड्र्स आज भी मन में उमंग भर देते हैं। क्या जमाना था वो। तब न सोशल मीडिया की लत थी, न गैजेट्स का शोर। सुकून के साथ इश्क का इजहार भी हो जाता था और इनकार भी। न किसी के खत वायरल होते थे, न किसी की इज्जत खराब होती थी। हां, जिनके दिल टूटते थे, वे खुद से ही जोड़ भी लेते थे। वो छत और गली-मोहल्ले वाला इश्क रह-रहकर दिल को उसी खुशनुमा दौर में लिए जाता है। खैर, आज के दौर में तो वैलेंटाइन-डे सोशल मीडिया पर शुरू होकर यहीं खत्म हो जाता है। इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप पर इजहार हो जाता है और यहीं इनकार भी। अब स्क्रीनशॉट वायरल होते हैं। वर्चुअल लड़ाई-झगड़े होते हैं। फिर कब, कौन, कहां, किसके साथ डेट पर चल देता है, कुछ पता ही नहीं चलता। लंबे मगर खूबसूरत इश्क शायद ही निभाए या चल पाते हों अब।

बदलते दौर को देख मैंने भी अब खुद को लगभग बदल लिया है। एआई की शरण में हूं। उससे पूछ रहा हूं कि 'नई प्रेमिका संग वैलेंटाइन-डे कैसे मनाऊं?' एआई बता रहा है, 'पहले उसको व्हाट्सएप पर अच्छा-सा मैसेज लिखो। फोन पर रोमांटिक बातें करो। शाम का टाइम फिक्स कर साथ कॉफी पीना तय करो। हां, साथ एक बुके जरूर ले जाना। इतने से ही आपका दिन बन जाएगा।' प्रेमिका चूंकि नए जमाने की है। उसके नाज-नखरे कुछ अलग हैं। दिल पर तुरंत ले लेती है। अटेंशन पूरी चाहती है। इश्क को कविता की मानिंद लेती है। इसलिए ध्यान भी खास रखना पड़ता है। नया-नया मामला है। नहीं चाहता वैलेंटाइन-डे पर पानी फिर जाए।

साथी लोग समझाते हैं, इस उम्र में तुम्हें इश्क में नहीं पड़ना चाहिए। मैं उनसे पूछता हूं, 'क्यों? इश्क की कोई उम्र नहीं होती। जब दिल चाहे इश्क कीजिए। एक से कीजिए या अनेक से, यह निर्भर आपकी जिंदादिली पर। यों भी, इश्क करते रहने से उम्र बढ़ती ही है, कम नहीं होती। इश्क दिल-दिमाग को मजबूत बनाता है। इश्क में नमक भी होता है मिठास भी। वैलेंटाइन बाबा इस हकीकत को बहुत अच्छे से जानते-समझते थे।'

नेगेटिविटी का साथ छोड़ पॉजिटिव बनिए। जितना पॉजिटिव रहेंगे, उतना ही इश्क परवान चढ़ेगा। मैं पॉजिटिविटी का दामन थामे हुए हूं। तकनीक के साथ पॉजिटिव वैलेंटाइन मनाने में यकीन रखता हूं। माना कि इश्क करने के मायने-तरीके बदल चुके हैं अब, पर जज्बा तो साथ है न। काफी है। अकसर सोचता हूं, जिनकी प्रेमिकाएं नहीं होतीं, उनका जीवन कितना नीरस रहता होगा? न कोई रोमांस, न कोई उमंग, न कोई टशन। वैलेंटाइन-डे आए या चला जाए उनकी सेहत पर क्या फर्क!

पुनः कह रहा हूं, इश्क की शमा दिल में जलाए रखिए। शाम होने का इंतजार न कीजिए। जीवन जितना मिला है, इश्क के हवाले कर दिमाग को स्ट्रेस-फ्री रखिए। प्रेमिका के लिए शेर कहते रहिए। कविताएं लिखते रहिए। हर वैलेंटाइन साथ जुड़े रहिए। इश्क का रंग गाढ़ा होता रहेगा, यकीन मानिए। और हां, इश्क के साथ अक्ल कतई न लगाएं। अक्ल इश्क की नजाकत का मजा किरकिरा कर देती है।

बकौल अकबर इलाहाबादी साहब-
इश्क नाजुक-मिजाज है बेहद
अक्ल का बोझ उठा नहीं सकता। *

{ लघुकथा / डॉ. अलका जैन 'आराधना' }

सच्चा प्यार

शहर की भाग-दौड़ और वैलेंटाइन-डे के शोरगुल से दूर, माधव अपने बगीचे में लगे उन पौधों को निहार रहे थे, जो वसंत की दस्तक से खिलखिला उठे थे। तभी उनकी पत्नी सावित्री, रसोई से अदरक वाली चाय लेकर बरामदे में आईं और हल्की मुस्कान के साथ माधव को चाय का प्याला थमाते हुए वहीं बैठ गईं।

तभी घर के दरवाजे की घंटी बजी। उनका बेटा और बहू हाथ में फूलों का एक बड़ा गुलदस्ता और केक लेकर भीतर आए। उन्होंने उत्साह में कहा, 'हैप्पी वैलेंटाइन-डे मम्मी-पापा!' माधव और सावित्री ने एक-दूसरे की ओर देखा। उनकी आंखों में एक-दूसरे के प्रति अगाध सम्मान था। बहू ने उत्सुकता से पूछा, 'पापा जी, आप आज मम्मीजी को क्या गिफ्ट दे रहे हैं?'

माधव ने अलमारी के दराज से एक पुराना, पीला पड़ चुका लिफाफा निकाला और सावित्री के हाथों में पकड़ा दिया। जब सावित्री ने उसे खोला तो उसमें उन तमाम जगहों की सूचियां और प्यारी तस्वीरें थीं, जहां वे पिछले चालीस सालों में साथ घूमने गए थे। माधव ने गरिमापूर्ण स्वर में कहा, 'मेरा उपहार उन हसीन पलों से जुड़ी वो यादें हैं सावित्री, जो हमने एक-दूसरे के साथ बिताई थीं।' यह देख-सुनकर सावित्री की आंखों में खुशी के आंसू छलक आए। उनके बेटे-बहू को एहसास हो गया कि सच्चा प्यार क्या होता है! *

{ पत्रिका चर्चा / विज्ञान भूषण }

प्रेम कथा अनंता

जिस तरह से ईश्वर और उसकी कथा का कोई अंत नहीं है, उसी तरह प्रेम की कथा भी अनंत है। यही वजह है कि विश्व साहित्य में आरंभ से ही प्रेम पर असंख्य कविताएं और कहानियां लिखी जाती रही हैं, लेकिन यह सिलसिला आज भी अनवरत जारी है। हिंदी जगत की अनेक पत्रिकाएं भी प्रेम पर केंद्रित विशेषांक निकालती रही हैं। इसी क्रम में 'निकट-43' का ताजा अंक आत्मकथात्मक प्रेमकथा विशेषांक के रूप में प्रकाशित होकर आया है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता तो यही है कि इसमें छपी सभी प्रेम कहानियां आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई हैं। यही वजह है कि इसमें प्रकाशित कहानियों में प्रेम, रचनाकार के आत्म से संपृक्त, बहुत सांद्र रूप में प्रकट हुआ है। इसमें कुछ आलेखों, कविताओं, एक संस्मरण और तेरह प्रेम कहानियों के अलावा संपादक कृष्ण बिहारी की लंबी कहानी 'एक शिकायत विहीन प्रेमकथाः अनागत' भी मौजूद है। अधिकांश कहानियां हमें एंद्रिकता से बहुत दूर प्रेम के देखे-अनदेखे भावजगत की ऐसी यात्रा पर ले चलती हैं, जहां प्रेमी और प्रेमिका के भीतर कुछ पाने की लालसा नजर नहीं आती है। वे सिर्फ एक-दूसरे के संग होने, हासिल पलों के जीने को ही प्रेम का प्रतिफल मान लेते हैं। प्रियंवद और जया जादवानी की कहानियां प्रेम को अलग ही कोण से प्रकट करती हैं तो कृष्ण बिहारी की कहानी प्रेम का नया व्याकरण रचती है। इनके अलावा कल्पना मनोरमा, पंकज सुबीर, कविता विकास, लता शर्मा और पूनम मनु की कहानियां भी अपने भावभीने कथानक और मुलायमियत भरी अभिव्यक्ति से मन में ठहर जाती हैं। अन्य कहानियां भी बेहद पठनीय हैं। ये कहानियां साबित करती हैं कि हिंसा और युद्ध की विभीषिका से आक्रांत आज के विश्व में मनुष्यता को बचाए रखने की सामर्थ्य केवल प्रेम में ही है। *

पत्रिकाः निकट-43 (आत्मकथात्मक प्रेमकथा विशेषांक),
संपादकः कृष्ण बिहारी, मूल्यः 50 रुपए

{ बेमिसाल / शिखर चंद जैन }

दुनिया भर में अलग-अलग स्थानों पर प्रेम के ऐसे स्मारक मौजूद हैं, जो अमर प्रेम की कहानियों के गवाह हैं। ये ऐतिहासिक स्मारक न केवल अब विश्व धरोहर माने जाते हैं, बल्कि पर्यटकों को आकर्षित भी करते हैं। प्रेम को समर्पित ये शानदार निशानियां, हर प्रेमी युगल को प्रेरित भी करते हैं। इनमें से कुछ के बारे में जानिए।

अद्वितीय-लाजवाब-शानदार
विश्व प्रसिद्ध प्रेम के स्मारक

बोल्ट कैसल अमेरिका

बोल्ट कैसल एलेक्जेंड्रिया बे, न्यूयॉर्क में हार्ट आइलैंड पर स्थित एक शानदार ऐतिहासिक महल और लोकप्रिय पर्यटन केंद्र है। इसे जॉर्ज सी बोल्ट ने अपनी पत्नी लुईस के लिए, अपने प्यार की निशानी के तौर पर बनवाना शुरू किया था। लेकिन लुईस के निधन के बाद यह अधूरा रह गया। यह एक छह मंजिला, 120 कमरों वाली राइनलैंड शैली की संरचना है, जिसमें सुरंगें, इटालियन उद्यान, एक ड्रॉब्रिज और एक ओएस्टर टॉवर नामक बच्चों का प्लेहाउस भी है। इसका निर्माण 1900 में शुरू हुआ था, लेकिन जनवरी 1904 में लुईस की अचानक मृत्यु के बाद, जॉर्ज बोल्ट का मन टूट गया। फिर उन्होंने इसे अधूरा छोड़ दिया। लेकिन यह अधूरा स्मारक, प्रेम की निशानी के तौर पर दुनिया भर में जाना जाता है।

शैटो डी चेनोंसो फ्रांस

महिलाओं का महल कहे जाने वाले इस महल की दीवारों में कई प्रेम कहानियां और रानियों के किस्से छिपे हैं। शैटो डी चेनोंसो को अकसर 'प्यार और प्रतिद्वंद्विता की निशानी' के रूप में देखा जाता है। इसकी कहानी एक प्रसिद्ध शाही प्रेम त्रिकोण से संबंधित है।

दरअसल, वर्ष 1547 में फ्रांस के राजा हेनरी द्वितीय ने इस महल को अपनी प्रेमिका डायने डी पोइटियर्स को उपहार स्वरूप दिया था, जिनसे वह गहरा प्रेम करते थे। डायने ने ही शेर नदी पर वह प्रसिद्ध मेहराबदार पुल बनवाया था, जो आज इस महल की सबसे बड़ी पहचान है। लेकिन हेनरी की मृत्यु के बाद, उनकी पत्नी रानी कैथरीन डी मेडीसी ने ईर्ष्यावश डायने को इस महल से निकाल दिया और खुद इस पर कब्जा कर लिया।

जूलियट का घर इटली

इटली देश के वेरोना में स्थित 'कासा डी गियुलिएट्टा' विलियम शेक्सपियर के पात्रों रोमियो और जूलियट के अमर प्रेम की याद दिलाता है। जूलियट का घर कासा डि गियुलिएट्टा, 13वीं सदी की एक ऐतिहासिक इमारत है। यह प्रसिद्ध 'रोमियो और जूलियट' नाटक से प्रेरित एक प्रमुख पर्यटक स्थल है, जहां आंगन में आइकॉनिक बालकनी और जूलियट

की कांस्य मूर्ति है। हालांकि जूलियट एक काल्पनिक पात्र है, लेकिन यह घर रोमांस के प्रतीक के रूप में प्रसिद्ध है। जूलियट की मूर्ति के बारे में ऐसी मान्यता है कि मूर्ति के दाहिने हाथ को छूने से प्यार में सौभाग्य मिलता है।

कोरल कैसल अमेरिका

आपको जानकर हैरानी होगी कि एक अमेरिकी व्यक्ति एडवर्ड लीडस्कैलनिन ने अपनी प्रेमिका के लिए कोरल कैसल नामक भवन खुद ही अकेले बनाया था। यह उसके प्रेम की अटूट शक्ति को दर्शाता है। फ्लोरिडा के होमस्टेड में स्थित कोरल कैसल एक रहस्यमयी पत्थर का ढांचा है, जिसे लैटिन अमेरिकी प्रवासी एडवर्ड लीडस्कैलनिन ने 1923-1951 के बीच अकेले बनाया था। 1,100 टन से अधिक कोरल चट्टान से निर्मित, इस संरचना में तराशे गए कई बड़े पत्थर, दीवारें और फर्नीचर शामिल हैं, जिसे 'फ्लोरिडा का स्टोनहेंज' भी कहा जाता है। एडवर्ड का कद मात्र 5 फीट और वजन 100 पाउंड था, फिर भी उन्होंने बिना किसी आधुनिक मशीनरी के लगभग 1,100 टन वजनी पत्थरों को काटकर और तराशकर यह महल खड़ा किया था। उन्होंने यह काम लगभग 28 वर्षों तक गुप्त रूप से किया। दरअसल, अपनी मंगेतर (एग्नेस) द्वारा शादी से एक दिन पहले रिश्ता तोड़ देने के बाद, टूटे दिल के साथ एडवर्ड ने इसे एक प्रेम स्मारक के रूप में बनाया था।

एलेनोर क्रॉसेस इंग्लैंड

एलेनोर क्रॉसेस, 13वीं शताब्दी के अंत में इंग्लैंड के राजा एडवर्ड प्रथम द्वारा अपनी पत्नी एलेनोर ऑफ कैस्टिले की याद में बनवाए गए 12 क्रॉस मेमोरियल हैं। वर्ष 1290 में एलेनोर की मृत्यु के बाद, दुःखी होकर राजा ने उनके अंतिम संस्कार की यात्रा के दौरान लिंकन से लंदन के बीच प्रत्येक पड़ाव (रात्रि विश्रामस्थल) पर पत्थर के ये भव्य क्रॉस बनवाए थे। इनमें से अब केवल तीन- गेडिंगटन, हार्डिंगस्टोन और वाल्थम, मूल रूप में बचे हैं। *

अपने देश भारत में भी प्रेम की दो बेमिसाल निशानियां मौजूद हैं। मुगल सम्राट शाहजहां द्वारा अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में बनाया गया सफेद संगमरमर का मकबरा ताजमहल, दुनिया में प्यार का सबसे बड़ा प्रतीक माना जाता है। ताजमहल, भारत ही नहीं दुनिया भर में निस्संदेह 'प्यार की सबसे खूबसूरत निशानी' माना जाता है। इसका निर्माण 1631 में शुरू हुआ और 1653 में पूरा हुआ। इसे बनाने में लगभग 22,000 मजदूरों और शिल्पकारों ने काम किया था। इसे राजस्थान के मकराना से लाए गए शुद्ध सफेद संगमरमर से बनाया गया, जिस पर कीमती पत्थरों की पच्चीकारी की गई है।

सबसे अनोखा ताजमहल-शालिमार बाग

शालिमार बाग को मुगल बादशाह जहांगीर ने 1619 में अपनी पत्नी नूरजहां के लिए बड़े मन से बनवाया था। शालिमार बाग, श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर) में स्थित एक प्रसिद्ध मुगल गार्डन है, जिसे 'श्रीनगर का ताज' भी कहा जाता है। यह बाग 'चहार बाग' शैली पर आधारित है और तीन छतों में विभाजित है, जो जल निकायों और फव्वारों से सुसज्जित है। यहां मौजूद चिनार के पेड़, रंग-बिरंगे फूल, दीवान-ए-खास और दीवान-ए-आम जैसे मंडप, पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। यह डल झील के दाहिने किनारे पर स्थित है और यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की अस्थायी सूची में शामिल है।

प्रेम की भावना को व्यक्त करते प्रतीक

प्रेम की गहरी भावना को व्यक्त करने के लिए पुराने दौर से ही कई तरह के प्रतीकों का सहारा लिया जाता रहा है। प्रेमी युगल के बीच प्रचलित प्रेम के कुछ प्रतीकों के बारे में आप भी जरूर जानना चाहेंगे।

{ मान्यता / अंजू जैन }

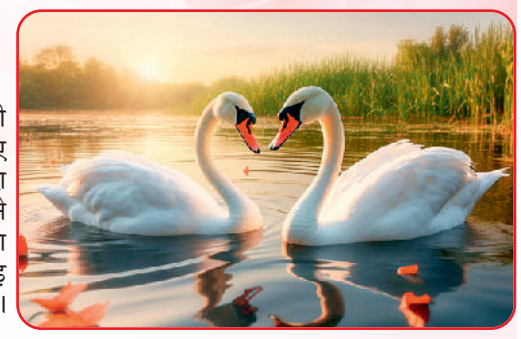

प्रेमी या प्रेमिका को जब अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए शब्द नहीं सूझते या फिर वे ज्यादा प्रभावशाली तरीके से प्यार का इजहार करने की चाहत रखते हैं तो ऐसे प्रतीकों का सहारा लेते हैं, जो बिना कुछ कहे उनके दिल में उमड़ रही प्यार की भावनाओं को व्यक्त कर देते हैं। ऐसे ही कुछ प्रतीकों पर एक नजर-

वीणा: वीणा केवल संगीत का वाद्ययंत्र ही नहीं है, यह अपने मधुर सुरों के माध्यम से भावनात्मक जुड़ाव और प्रेम के गहरे पहलुओं को भी प्रकट करती है। वीणा को प्रेम, शांति और सद्भाव का एक महत्वपूर्ण प्रतीक माना जाता है। भारतीय संस्कृति और विभिन्न वैश्विक परंपराओं में इसके अलग-अलग प्रतीकात्मक अर्थ हैं। नॉर्वे और आइसलैंड की परंपराओं में माना जाता है कि वीणा के तार एक सीढ़ी बनाते हैं, जो प्रेम और आध्यात्मिक चेतना की उच्च अवस्थाओं तक पहुंचने का मार्ग है। वीणा की मधुर ध्वनि को अकसर प्रेम के गीतों और आकर्षण से जोड़ा जाता है।

रोज क्वार्ट्ज: रोज क्वार्ट्ज को मुख्य रूप से निःस्वार्थ प्रेम, करुणा और भावनात्मक उपचार के पत्थर के रूप में जाना जाता है। यह कोमल गुलाबी रंग का क्रिस्टल हृदय चक्र से गहराई से जुड़ा होता है, जो आत्म-प्रेम रोमांटिक रिश्तों में सुधार, मित्रता और पारिवारिक प्रेम को बढ़ावा देने के लिए उपयोग किया जाता यह प्रेम के सभी रूपों को आकर्षित करता है, प्रेम के टूटे रिश्तों को जोड़ने में मदद करता है। यह प्रेमियों के बिछड़ने से होने वाले दर्द, भावनात्मक पीड़ा और तनाव को दूर करने में सहायक है। वैवाहिक जीवन में शांति और प्रेम बढ़ाने के लिए इसे बेडरूम के दक्षिण-पश्चिम दिशा में रखना शुभ माना जाता है। यह शुक्र ग्रह से संबंधित है, जो रोमांस, सौंदर्य और कलात्मकता को बढ़ाता है।

हंस: हंस अपनी वफादारी, समर्पण और आजीवन साथ निभाने के स्वभाव के कारण प्रेम, निष्ठा और पवित्रता का प्रतीक माने जाते हैं। इन्हें अकसर एक-दूसरे के साथ कपल के रूप में देखा जाता है, जो गहरे प्रेम और रोमांस का प्रतीक है। वे अपने साथी के प्रति जीवन भर प्रतिबद्ध रहते हैं और एक-दूसरे के साथ गर्दन मोड़कर दिल के आकार की आकृति भी बनाते हैं। इनके बीच इतना गहरा लगाव होता है कि लोग अकसर प्रेमी जोड़ों को 'दो हंसों का जोड़ा' कहते हैं।

सेब: सेब ऐतिहासिक और पौराणिक रूप से प्रेम, सुंदरता और उर्वरता का एक शक्तिशाली प्रतीक है। ग्रीक और रोमन कथाओं में यह प्रेम की देवी एफ्रोडाइट वीनस से जुड़ा है। एफ्रोडाइट प्राचीन यूनानी पौराणिक कथाओं में प्रेम, सौंदर्य, इच्छा और प्रजनन क्षमता की मुख्य देवी थीं। रोमन पौराणिक कथाओं में उन्हें 'वीनस' के रूप में जाना जाता है। वीनस, अकसर सेब धारण किए हुए चित्रों में दिखाई देती हैं। सेब को 'प्रेम का फल' भी माना जाता है। यह अकसर काम भाव और गहरे भावनात्मक जुड़ाव का प्रतिनिधित्व करता है।

इनफिनिटी चिन्ह: इनफिनिटी चिन्ह, क्षैतिज आठ की आकृति जैसा दिखता है और शाश्वत प्रेम, अटूट बंधन व समर्पण का सार्वभौमिक प्रतीक है। इसका मतलब है वह प्यार जिसका न कोई आरंभ है और न कोई अंत। यह एक गहरा भावनात्मक प्रतीक है, जो समय और स्थान से परे शाश्वत संबंध और कभी न खत्म होने वाली प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह प्रेमी जोड़ों या परिवार के सदस्यों के बीच के स्थायी और मजबूत संबंध का प्रतिनिधित्व करता है। इसका उपयोग आभूषणों (अंगूठी, नेकलेस, ब्रेसलेट), टैटू और उपहारों में किया जाता है ताकि अपने स्नेह की गहराई को व्यक्त किया जा सके। *

आमतौर पर माना जाता है कि अगर आप सिंगल हैं यानी आपका कोई लव या लाइफ पार्टनर अब तक नहीं है तो वैलेंटाइन-डे आपको मायूस कर देगा। लेकिन ऐसा नहीं है। आप अलग अंदाज में अपने साथ ही वैलेंटाइन-डे मना सकते हैं।

सिंगल हैं तो क्या हुआ खुद के साथ करें सेलिब्रेट

{ अलग नजरिया / नम्रता नदीम }

हर वर्ष 14 फरवरी यानी वैलेंटाइन-डे पर सोशल मीडिया कपल्स की तस्वीरों से भरा रहता है। माना जाता है कि ऐसे लोग जो किसी के साथ रिलेशनशिप में नहीं हैं, उन्हें यह दिन काफी चुभता है, इस दिन उन्हें अकेलेपन की पीड़ा भीतर तक सालती है। अगर आपका भी कोई पार्टनर नहीं है, आप खुद को अधूरा महसूस करते हैं तो यह सोच सही नहीं है। हम आपको बताते हैं कि कैसे अपने अकेलेपन को दूर कर, यह दिन मना सकते हैं?

खुद से ही प्यार करें

अगर आपके साथ कोई साथी न हो तो खुद को ही अपना वैलेंटाइन बनाएं। खुद को गिफ्ट करें। अकेले जाकर किसी रेस्टोरेंट में खुद को ट्रीट दें। दूसरे लोगों को एक साथ देखकर उनसे अपनी तुलना करके परेशान न हों। इससे अगर कोई आपके साथ न भी हो तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

क्या हुआ जो बैचलर हैं

अगर आपने अभी तक शादी के लिए किसी का चुनाव नहीं किया या कोई ऐसा पार्टनर आपको नहीं मिला, जिसके साथ आप जीवनभर चलने का संकल्प ले सकें, तो क्या हुआ? आप अपनी इच्छा से सिंगल हैं। इसमें गम मनाने की तो कोई बात नहीं। सिंगल्स के ग्रुप को ज्वाइन करें और अपने सिंगल हुड को एंज्वाय करें।

शादीशुदा भी तो खुश नहीं

अगर आपने अभी तक शादी नहीं की या किसी के साथ रिलेशनशिप में नहीं हैं तो उनके बारे में सोचो, जो कपल्स शादी करके भी अकसर परेशान रहते हैं। उनसे पूछकर देखें तो वो बताएंगे कि जिन हालात में वो हैं, इससे तो अच्छा था वो शादी ही न करते। इस तरह अपने सिंगल हुड को अपनी उन्नति के लिए एक बड़ी उपलब्धि समझते हुए उसे एंज्वॉय करें। आप जो हैं, जैसे हैं, उसी में संतुष्ट रहें।

करियर पर फोकस करें

कॉलेज में अपने दोस्तों को अपनी पार्टनर के साथ खुश देखकर उनसे द्वेष करना सही नहीं है। हो सकता है वो सामान्य दोस्ती में हों, न

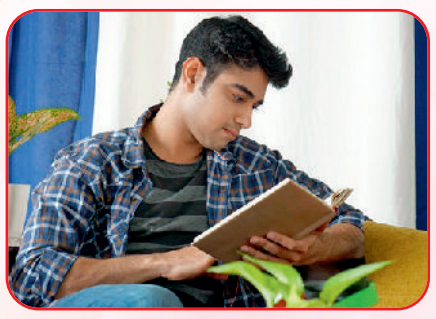

कि एक दूसरे के गर्लफ्रेंड-ब्वॉयफ्रेंड हों। आप भी इस तरह किसी से दोस्ती करके उस दोस्ती को भी एंज्वॉय कर सकते हैं। जो टीनएजर अपने सिंगल हुड स्टेटस को लेकर परेशान होते हैं, उन्हें अपने करियर पर फोकस करने की ज्यादा जरूरत है। क्योंकि यही वह उम्र है, जब किसी से रिलेशनशिप में रहकर अपने जीवन में तनाव पालने की बजाय करियर पर फोकस करना भविष्य के लिए ज्यादा अच्छा होता है।

अकेले होने का गम कैसा

आजकल ऐसे तमाम ग्रुप और क्लब हैं, जहां सिंगल लोग एक-दूसरे के साथ को एंज्वॉय करते हैं। वे आपस में मिलकर पार्टी करते हैं या कहीं घूमने का प्रोग्राम बनाते हैं यानी सिंगल हुड कोई कमी होने का पर्याय नहीं है। आप अपने आपको किस रूप में देखना

चाहते हैं, यह ज्यादा अहम है। हमें अपने आसपास ऐसे तमाम पुरुष और महिलाएं मिल जाएंगी, जिन्होंने अपने मन से सिंगल रहना चुना है। वे अकेले रहकर अपनी जिंदगी को बहुत ही अच्छे तरीके से जी रहे हैं। इसलिए सिंगल हुड के कई फायदे होते हैं, इसे भी समझें।

सोच समझकर बनाएं रिलेशन

आपके सर्कल में रहने वाले लड़के या लड़कियां अगर सभी किसी न किसी रिलेशनशिप में हैं और आप उनमें अकेले सिंगल हैं, तो अगर वे जबर्दस्ती आपको किसी के साथ रिलेशनशिप में आने, डेटिंग संबंधी सलाह देने या जबर्दस्ती किसी के साथ इनवॉल्व करने की कोशिश करें तो ऐसे लोगों से दूरी बना लें। क्योंकि सिंगल होने का मतलब किसी की दया का पात्र होने का नहीं है, जो लोग सिंगल होने को कमतर या बदकिस्मती समझ लेते हैं, उन्हें यह जता दें कि आप अपनी इच्छा से सिंगल हैं। किसी के साथ बुरे रिलेशनशिप में रहने से सिंगल होना आपको ज्यादा दिमागी सुकून देता है। प्यार का रिश्ता भले ही देर से बने लेकिन यह रिश्ता प्यारा, मजबूत और समझदारी से भरा होना चाहिए। *

{ सिने-ट्रेंड / अशोक जोशी }

अपने आरंभिक काल से ही प्रेम आधारित कहानियों पर हिंदी फिल्में बनती रही हैं। बदलते समय और दर्शकों की पसंद के अनुसार ऐतिहासिक और लोकचर्चित प्रेम कहानियों का फिल्मी रूपांतरण होता रहा है। ऐसी ही कुछ चर्चित फिल्मों पर एक नजर।

फिल्मी पर्दे पर खूब दिखती रही हैं ऐतिहासिक-लोकचर्चित प्रेमकथाएं

'आम्रपाली' में सुनील दत्त के साथ वैजयंती माला

'मुगल-ए-आजम' में दिलीप कुमार-मधुबाला

जब से हिंदी फिल्मों का निर्माण शुरू हुआ है, फिल्मकारों का सबसे प्रिय विषय प्रेम ही रहा है। अधिकांश फिल्मों में किसी न किसी रूप में प्रेम मौजूद रहता ही है। लेकिन कई ऐसी माइलस्टोन फिल्में भी बनी हैं, जो ऐतिहासिक या लोकचर्चित पात्रों की प्रेमकथाओं पर आधारित रही हैं। इनमें से कुछ के बारे में यहां बता रहे हैं।

खूब पसंद की गईं ऐतिहासिक प्रेम कहानियां

हमारे यहां ऐसे कई ऐतिहासिक पात्र हुए हैं, जिनकी प्रेमगाथाएं पर्दे पर ज्यादा सफल हुई हैं। इस क्रम में सबसे ज्यादा सफल फिल्म के. आसिफ की 'मुगले आजम' को माना जाता है। इस फिल्म में पृथ्वीराज कपूर ने अकबर, दिलीप कुमार ने सलीम और मधुबाला ने अनारकली की भूमिका में जान डाल दी थी। भव्य सेट, दिलचस्प संवाद और कर्णप्रिय गानों के बल पर यह फिल्म अब तक की सबसे ज्यादा सफल फिल्मों में शामिल है। इसी के आसपास बनी 'अनारकली' में प्रदीप कुमार और बीना राय ने अभिनय किया था। सी. रामचंद्र ने इसके लिए मधुर संगीत रचा था। यह फिल्म भी सफल रही। मुगलकाल के एक और प्रेम प्रसंग पर आधारित 1963 में बनी फिल्म 'ताजमहल' शाहजहां और मुमताज महल के प्रेम पर आधारित थी। इस रंगीन फिल्म की विशेषता रोशन का मधुर संगीत था। इसके गीत 'जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा' और 'पांव छू लेने दो' आज भी बहुत पसंद किए जाते हैं। इसके बाद आशुतोष गोवारीकर ने फिल्म 'जोधा-अकबर' में अकबर और जोधाबाई की प्रेमकहानी को पर्दे पर उतारा। साठ और सत्तर के दशक में ऐतिहासिक प्रेम कथाओं पर आधारित जो श्वेत-श्याम फिल्में बनीं उनमें मांडू के अंतिम सुलतान बाज बहादुर और एक गड़रिया की गायिका बेटी रूपमती की प्रेमगाथा पर आधारित 1957 की फिल्म 'रानी रूपमती' में भारत भूषण और निरूपा राय ने मुख्य भूमिका निभाई थी। इसी तरह मगध के राजा चंद्रगुप्त और ग्रीस की हेलेना की युद्ध के बाद प्रेम में बदली कहानी पर 1959 में बनी फिल्म सम्राट 'चंद्रगुप्त' में भी भारत भूषण और निरूपा राय की जोड़ी थी। सन 1946 में पृथ्वीराज कपूर और मीना कुमारी अभिनीत फिल्म 'पृथ्वीराज संयोगिता' बनी थी। जो इनके प्रेम पर आधारित थी। वर्ष 2022 में यशराज फिल्म्स ने अक्षय कुमार-मानुषी छिल्लर अभिनीत फिल्म 'सम्राट पृथ्वीराज' का निर्माण किया था। रजिया सुल्तान और याकूत की प्रेम

कहानी पर आधारित फिल्म 'रजिया सुल्तान' का दो बार निर्माण हुआ। 1961 में जयराज और निरूपा राय मुख्य भूमिकाओं में थे तो 1983 में बनी 'रजिया सुल्तान' को धर्मेंद्र और हेमामालिनी की जोड़ी के लिए जाना जाता है। मगध के राजा बिंबसार और वैशाली की नगरवधु आम्रपाली की प्रेम कहानी पर आधारित लेख टंडन की फिल्म 'आम्रपाली' में सुनील दत्त और वैजयंती माला ने मुख्य भूमिका निभाई थी। फिल्म के गाने कर्णप्रिय थे, इसके बावजूद यह फिल्म नहीं चली। इसी तरह ऐतिहासिक प्रेमकथाओं पर आधारित 'नूरजहां', 'यहूदी' भी नहीं चल पाईं। सन 1984 में रिलीज हुई हिंदी फिल्म 'उत्सव' प्राचीन संस्कृत नाटक 'मृच्छकटिकम' पर आधारित थी। इसमें वसंत सेना (रेखा) और एक गरीब ब्राह्मण चारुदत्त (शेखर सुमन) की प्रेम कहानी को दर्शाया गया। इसका निर्माण शशि कपूर ने और निर्देशन गिरीश कर्नाड ने किया था। हालिया बरसों में संजय लीला भंसाली की मराठा पेशवा बाजीराव और बुंदेलखंड की राजकुमारी मस्तानी की प्रेम कहानी पर आधारित 'बाजीराव मस्तानी' ने सफलता के झंडे गाड़ दिए थे।

लोक चर्चित प्रेम पर आधारित फिल्में

'लैला-मजनू', 'हीर-रांझा', 'सोहनी-महिवाल', 'शीरी-फरहाद' ऐसी लोक

चर्चित प्रेम कहानियां हैं, जो सदियों से सुनी और सुनाई जाती रही हैं। इन पर बनी अधिकांश हिंदी फिल्में सफल रही हैं। इन कहानियों में 'लैला-मजनू' पर सबसे ज्यादा फिल्में बनी हैं। इनमें 1953 में बनी शम्मी कपूर और नूतन अभिनीत और उसके बाद 1973 में उनके भतीजे ऋषि कपूर और रंजीता अभिनीत 'लैला-मजनू' सबसे ज्यादा सफल रहीं। सन 1956 में बनी 'शीरी फरहाद' में प्रदीप कुमार और मधुबाला की भूमिकाएं थीं। लोक प्रेम कहानियों में पंजाब की माटी से जन्मी 'हीर-रांझा' और 'सोहनी-महिवाल' की प्रेम कहानियों पर सफल फिल्में बनी हैं। पहली फिल्म 1958 में बनी थी। इसमें भारत भूषण और निम्मी की भूमिकाएं थीं। इसके बाद 1984 में भारत और रूस के सहयोग से बनी 'सोहनी-महिवाल' का निर्देशन उमेश मेहरा ने किया था। इसमें सनी देओल और पूनम ढिल्लों के साथ जीनत अमान भी थीं। अनु मलिक के मधुर संगीत से रची यह फिल्म बेहद लोकप्रिय रही। राजस्थान की लोककथा पर आधारित फिल्म 'ढोला-मारू' भी सफल रही। लेकिन इन तमाम प्रेम कहानियों में 'हीर-रांझा' की प्रेम कहानी सबसे ज्यादा हिट हुई। 1970 में चेतन आनंद ने प्रिया राजवंश और राजकुमार को लेकर 'हीर रांझा' का निर्माण किया था।

कहने का सार है कि इतिहास, पुराणों और लोक संस्कृति में प्रसिद्ध प्रेमकथाओं पर फिल्मों का निर्माण हमेशा से होता रहा है। कुछ अपवादों को छोड़ दें तो इन्हें दर्शक खूब पसंद भी करते हैं। *